प्रेम पत्र

प्यारे दोस्त चन्द्रशेखर जी

सादर प्रणाम।

आप जनता पार्टी के अध्यक्ष हैं और इसलिए उसके खेवनहार हैं। मैं इस नाते आपकी इज्जत करता हूं। आपने उज्जैन में जनता पार्टी की मीटिंग में जो शब्दों की धुआंधार वर्षा की उससे मुझे छोटी सी शंका पैदा हो गई।

आपने फर्माया कि जनता पार्टी अभी तक देश के करोड़ों गरीबों का कोई कल्याण नहीं कर पाई है। आपने पार्टी के बड़े-बड़े नेताओं की लड़ाइयों का भी जिक्र किया। इससे ऐसा लगा कि अब आप जनता पार्टी से काफी दुखी हो गये हैं। लेकिन शायद आप यह भूल गये कि जनता पार्टी के बहुत बड़े-बड़े निर्माता आंखों से ओझल होकर रस्सा-कशी में लगे हुए हैं और चिकमगलूर के बाद अब उनकी रस्सा-कशी को दूसरी मंजिल भी दिखाई देने लगी है।

आप तो जानते ही हैं जब दूसरे हलवाई की दुकान खुल जाती है तो पकवान खाने वालों का भाव बढ़ जाता है और खिलाने वालों का गिर जाता है।

आपकी सेवा में यह सुझाव रखना चाहता हूं कि अब आप पहले से ही जनता पार्टी के पुराने घटकों के सदस्यों के घर पर गर्मागरम पकवान भिजवाने का प्रबन्ध कर लें। ऐसा करने से शायद जनता पार्टी आने वाले चुनावों तक जीवित रह सके।

आपका

चिल्ली
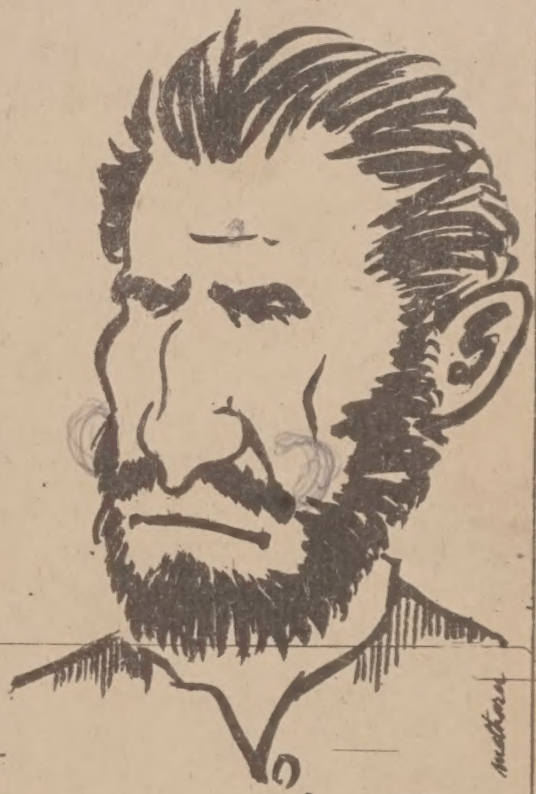
मुख पृष्ठ पर

चिल्ली शेख साहब की
अक्ल में जम गया गर्दा
देखा अपनी बेगम को,
झट से लगाया पर्दा।
रीति और रिवाज के
हैं कट्टर और मनमानी
पर्दा लगाया इसलिये
शक्ल न जाये पहचानी॥

अंक : ३६, २३ नवम्बर से २९ नवम्बर १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस

प्रश्न दीवानों के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के

नरेन्द्र कुमार कश्यप, सहारनपुर

प्र० : जब महफिल जमीं थी सभी मेहमान वहां थे।
बहुत ढूंढ़ा लेकिन आप न मालूम कहाँ थे॥

उ० : तुम देख रहे उसको, नजरों में जो बसा।
हम कैसे दिखते तुमको, आंखों में था नशा॥

संजीव कुमार, डाल्टनगंज (बिहार)

प्र० : नारी, लज्जा त्यागने को कब मजबूर हो जाती है ?

उ० : अपमानित करते उसे, जब दुर्जन विद्रूप।
नारी लज्जा छोड़ती, धर चण्डी का रूप॥

मुहम्मद सलीम, 'खमोश', हजारी बाग

प्र० : प्रेम में कोई अनोखी बात कब होती है ?

उ० : गुस्से में थी प्रेमिका, मारी उसने लात।
ऊपर लव, भीतर घृणा हुई अनोखी बात॥

नरिन्द्र कुमार 'बीना', कपूरथला

प्र० : आशिक की आखिरी इच्छा क्या होती है ?

उ० : फांसी के अभियुक्त की जैसी इच्छा होय।
आशिक की भी आखिरी, वैसी इच्छा होय॥

गुरुपोल एसपोल, कनोआघाट (हि० प्र०)

प्र० : गम के बदले दी हंसी, लेकिन वो फिर भी नहीं फंसी ?

उ० : सुन्दरी को आपने जो दी हँसी,
वासनामय हँसी थी, वह नहिं फँसी।

हरदीप गुलाटी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली

प्र० : शादी के बाद खुशी के दिन कब आते हैं ?

उ० : 'पत्नी पीड़ित' पति तभी कुछ दिन राहत पाय।
उसे अकेला छोड़कर पत्नी मैके जाय॥

माणिक श्रेष्ठ, कलिंग बाजार, नेपाल

प्र० : 'मुझे तो लूट लिया मिलके हुस्न वालों ने' अब बताइए क्या करूं काका ?

उ० : जिन्होंने लूटा तुम्हें जाने या अनजाने में,
उन हसीनों की रपट, कर दो जाके थाने में।

मनोहर खत्री, फाफाडीह, रामपुर

प्र० : मेरे पड़ौस में एक लड़की है, बहुत सीधी-सादी। पवित्र इतनी है, जैसे शुद्ध खादी। उसका प्यार कैसे मिले ?

उ० : सीधी-सादी बात है, तरस रहे बेकार।
तुम भी बनो पवित्र तो, मिल सकता है प्यार॥

साकेत भूषण, फैजाबाद (उ० प्र०)

प्र० : दाढ़ी की झाड़ी में पड़ जाएं जुंआ, क्या करे उस बेचारा मियां ?

उ० : दाढ़ी के झुरमुट्ट में जूं पड़ जाएं जब्ब।
डी० डी० टी० को छिड़कलें, मर जाएंगे सब्ब॥

राजगोपाल सहानी, इन्दौर

प्र० : प्रेमिका प्रेमी को कब भूल जाती है ?

उ० : दूजा प्रेमी मिल गया, उससे हुआ विवाह।
पहले प्रेमी की उसे, फिर क्यों हो परवाह॥
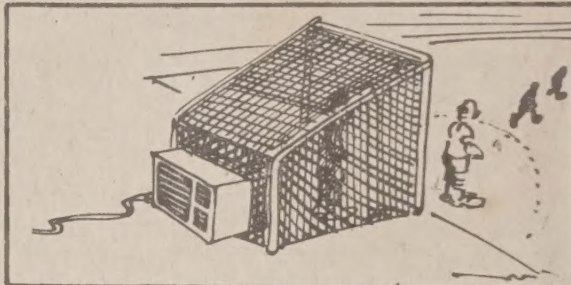
हेमन्त कुमार पोद्दार, कानपुर

प्र० : भाई की पत्नी को भावी या भाभी क्यों कहते हैं ?

उ० : भाभी-भावी छोड़कर, नया राग आलाप।
भइया की चाभी उसे कह सकते हैं आप॥

गुरदीप सिंह विनायक, यमुनानगर

प्र० : मैं अपने-आपको प्रसिद्ध कैसे कर सकता हूं ?

उ० : स्वार्थ छोड़कर कीजिए, जनहित में कुछ काम।
अखबारों में छपोगे, हो जाएगा नाम॥

केवल प्रकाश, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : नास्तिक लोगों की संख्या बढ़ती क्यों जा रही है ?

उ० : रहता पालियामेंट में एक विरोधी पक्ष।
नास्तिक भी हैं जरूरी, ईश्वर का यह लक्ष्य॥

धर्मेन्द्र दीपक, करनाल

प्र० : काका, यह बतलाओ आप, कितने बच्चों के हो बाप

उ० : उत्तर अपने प्रश्न का सुन लीजे, चुपचाप।
हम हैं काका सभी के, नहीं किसी के बाप॥

धीरज कुमार, पानीपत

प्र० : काका जी, यदि आप दाढ़ी को साफ करा लें तो ?

उ० : मुखमंडल से जिस समय, दाढ़ी होगी साफ।
पर्सनेल्टी उसी क्षण, रह जाएगी हाफ॥

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

हरमन हेस के नावल पर आधारित मुख्य कलाकार—शशिकपुर, सिम्मी

प्राचीन भारत में एक ब्राह्मण बेटे की सत्य तथा जीवन के अर्थ की खोज की दीवानी कहानी।

मित्र गोविन्द हमें दो वर्ष हो गये इन साधुश्रों के साथ ।
श्रौर श्रब तक हमें जीवन के श्रर्थ का पता नहीं लगा यह साधु खुद अंधेरे में हैं ! इनके पास टार्च तक नहीं है ।

हमें इन साधुश्रों से ज्ञान प्राप्त नहीं होगा ।
यार मैं तो पहले ही कहता था कि जीवन का श्रर्थ किसी शब्दकोष में देख लो ।
मैंने तुम्हें बताया तो था कि मेरे शब्दकोष के 'जी' वाले पृष्ठ चूहे खा गये थे ! तभी तो यह पापड़ बेलने पड़े ।

चलो कहीं श्रौर चलें ! यहाँ समय नष्ट करना बेकार है !
मेरा ख्याल है शिरड़ी के साईं बाबा के पास जायें सुनील दत्त श्रौर मनोज कुमार भी वहीं गये थे ।

या फिर महर्षि महेश योगी के श्राश्रम में भर्ती हुश्रा जाये ! लेकिन वहाँ फीस तगड़ी लगती है ।
श्राचार्य रजनीश
रजनीश के श्राश्रम में दंगा फसाद होता है । तुम्हारे जैसे पतले हीरो की वहाँ हड्डी पसली टूट जायेगी ।
मैं साधू, योगियों श्रौर श्राचार्यों के पास नहीं जाऊंगा ।

फिर क्या इरादा है ?
मैं जीवन को जीवन में जाकर देखना चाहता हूं मैं तुमसे श्रलग होना चाहता हूं । श्रागे का हाल तुमको अंग्रेजी के कमेंटेटर नरोत्तमपुरी सुनायेंगे ! वेरी गुड मार्निंग लिसनर्ज···

सिद्धार्थ नदी पार करता है ।
वासुदेव मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं है ।
तुम मेरे चप्पू पर श्रपने श्राटोग्राफ दे देना ।
ठीक है ! चलो नदी पार कराश्रो ।

यह तो राज दरवार की नर्तकी कमला की पालकी है शायद इसे पता हो जिसकी मुझे खोज है ।

कमला मुझे अपना मित्र बनाओ और मुझे जीवन का अर्थ समझाओ ।
तुम्हें जीवन के अर्थ का भी पता नहीं ।
नहीं
कौन से स्कूल से तुमने हॉयर सैकेंड्री पास की ।

अब तो बताओ ।
पास आओ
दूर से ही बताओ
जीवन का अर्थ बहुत गहरा है ! दूर से समझ नहीं आयेगा ।
डिक्शनरी चूहों द्वारा कुतरे जाने पर क्या-क्या करना पड़ता है ।

जीवन का अर्थ नहीं होता ।
यह कैसे हो सकता है ?
मैं तुम्हें समझाती हूं…

जीवन का अर्थ नहीं होता । अर्थ सिर्फ रेडियो का होता है । वह जो तार खिड़की से निकाल कर मिट्टी में दबाई जाती है उसे अर्थ कहते हैं ।

अब आई समझ में ? न आई हो तो किसी रेडियो मैके-निक से पूछ लेना ।
मैं जा रहा हूँ ।

गोविन्द कैसे हो ?
तुम मेरा नाम कैसे जानते हो ?
तुमने मुझे नहीं पहचाना ?
अरे तुम सिद्धार्थ ! कहां रहे इतने वर्ष ?
बेकार नष्ट किये दोस्त ! जो बात मालूम हुई वह तो रेडियो मैकेनिक गाइड से भी मालूम हो सकती थी ।

पहचाना? मुझे ?
क्यों पहचानूं ? तुम क्या पहेली हो ?
बीस वर्ष पहले नाव में मैंने नदी पार की थी ।
फिर ?
वर्ल्ड रिका कितने वर्षों बाद नाव पार करने का है ?
HELP

तुम जीवन के अर्थ की तलाश में दर-दर की खाक छानते रहे हो ? तुमने मुझ से पूछ लिया होता । जीवन एक नदी है ! शरीर हमारा नाव है ! कर्म चप्पू हैं । नदी में जो मगरमच्छ हैं वह इन्कम टैक्स अफसर हैं—
बासुदेव तुमने मेरी आंखें खोल दीं ! इन्कम टैक्स वालों से बचने के लिए ही मैं एक जगह नहीं टिकता ।
तुम मेरे पास रहो जीवन का अर्थ और गहराई से समझ आ जायेगा ।

जब नाव खेने का लायसैंस लेने के लिए तुम्हें कमेटी के दफ्तर जाना पड़ेगा ।

मैं और मेरी मां वैष्णो देवी जाने निकले थे कि माँ को सांप ने काट खाया ।

पहचाना मुझे कमला ?
देखते ही पहचान लिया सिद्धार्त ।
यह लड़का तुम्हारा बेटा है ।
सारे शहर में मैं ही तो एक था जिसे एमर-जेंसी में नस-बन्दी कैम्प वाले नहीं पकड सके
मैं मर रही हूं ।

शुक्र है कमला ने आम फिल्मी हीरोइनों की तरह मरते समय भाषण नहीं दिया ।

सिद्धार्त तुम्हारा बेटा बहुत बड़ा हो गया हैं । अब इसे स्कूल में भर्ती कर लो ।
मैं स्कूल नहीं भेजूंगा इसे ।
क्यों ?
मैं प्रकृति की गोद में इसे पालूंगा । ये नदी, पेड़-पौधे सबसे बड़े शिक्षक हैं और ये ट्यूशन और फीस भी नहीं मांगते ।

मेरा बेटा बदमाश निकला ! हमारी सारी कमाई लेकर चम्पत हो गया ।
मेरा ख्याल है कि वह एक्टर बनने बम्बई गया होगा, आजकल सब लड़के यही करते हैं ।
यह जलवायु प्रदूषण का ही परिणाम है कि पेड़ पौधे भी उल्टी शिक्षा देने लग गये हैं कल कारखानों के धुंये और मैल ने इनके दिमाग भी दूषित कर दिये हैं ।

शेष पृष्ठ ४० पर

बदलती चूड़ियां

त्रिलोकीनाथ श्रीवास्तव

मैं एक लेखक हूं, यह सत्य है; फिर भी किसी ऐरे-गैरे नत्थूखैरे पर कहानी लिखना मुझे कतई पसन्द नहीं। लेकिन होता यह है कि यहां कोई व्यक्ति लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुआ कि ढेर सारे लोग उसके इर्द-गिर्द मंडराने लगते हैं, अपने ऊपर कहानी लिखवाने के लिए। उनमें से कोई अपने जीवन की विचित्र घटनाएं सुनाकर उस पर कहानी लिखने का अनुरोध करता है, तो कोई अपने जीवन के दिलचस्प और गोपनीय प्रेम-प्रकरण सुनाकर उस पर ही कहानी लिख देने का आग्रह करता है। लेखक स्वभावतः इन बातों को सुनने में दिलचस्पी लेता है, क्योंकि उसे यह आशा रहती है कि ठीक उसी घटना पर वह कहानी लिखे या न लिखे, लेकिन उन विवरणों का कोई हिस्सा कभी उसके काम आ सकता है।

तो लेखक होने के नाते मैं भी ऐसे विवरण ध्यान से सुनता हूं, लेकिन जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, सब पर मैं कहानी नहीं लिख सकता। नतीजा यह होता है कि बहुत से लोग बुरा मान जाते हैं कि लीजिए, इन्होंने तो सारा किस्सा भी सुन लिया और अब हम पर कहानी नहीं लिखते। खैर, हुआ करें लोग इस तरह नाराज, मुझे परवाह नहीं रहती उनकी नाराजगी की। मैं अपना सिद्धान्त किसी भी शर्त पर बदल नहीं सकता।

जिस मकान में मैं रहता हूं, उसी के सामने वाले दूसरे मकान में मीना रहती है। उसे भी मैं कई बार अपने सिद्धान्त के बारे में बता चुका हूं, पर उसकी समझ में ही नहीं आती यह बात।

मीना से मेरा परिचय हुए कुल छः महीने हुए हैं। हम दोनों में दो महीने के अन्दर ही काफी मित्रता हो गई थी। इसका मुख्य कारण था मीना का साहित्य से शौक और मैं था एक साहित्यकार, यानी लेखक। साहित्य में दिलचस्पी रखने वालों की साहित्यकारों में और भी गहरी दिलचस्पी होती है।

मेरी किताबें ही सबसे बड़ा आकर्षण थीं मीना के लिए। अक्सर किताबें लेने और फिर पढ़ने के बाद उन्हें लौटाने ही आती थी वह मेरे पास।

मैं रोज सुबह गैलरी में खड़ा होकर डाकिए का इन्तजार करता था। पत्र-पत्रिकाएं आती रहती थीं, साथ ही संपादकों के स्वीकृति-पत्रों का भी इन्तजार रहता था।

अजीब बात यह थी कि मीना भी रोज सुबह गैलरी में खड़ी होकर इन्तजार किया करती थी डाकिए का। न जाने किस चीज की प्रतीक्षा रहती थी उसे। इस तरह गैलरी में हम दोनों का खड़े रहना ही हमारे परिचय का जरिया बना। डाकिए की राह देखते-देखते अनजाने ही हम दोनों एक दूसरे की राह देखने लगे।

एक दिन मीना मेरे कमरे में आई और नमस्ते करके बोली···"बहुत दिनों से सोच रही थी कि आपका परिचय प्राप्त किया जाए, पर···'

'जी, बड़ी खुशी की बात है, 'मैंने कहा, 'आप आ क्यों नहीं गयीं कभी दर्शन देने। परिचय भी हो जाता।'

'सच बताऊं ? मुझे आपसे डर लगता था।' बगैर झिझके ही कह दिया उसने।

मेरी भी हिम्मत बढ़ी। मैंने कहा—डर क्यों लगता था भला ? मैं खा थोड़े ही जाता आपको।'

मीना की हिम्मत तो देखिए, फिर भी झेंपी नहीं वह। खिलखिला कर हंस पड़ी जोर से और बोली—'अपनी कहानियों के पात्रों की तरह क्या आप भी हर वक्त ऐसी ही मजेदार बातें करते हैं ?',

'हर वक्त तो नहीं, पर कभी-कभी जरूर करता हूं। 'मैंने कह दिया।

वह फिर हंस पड़ी। बड़ी भली लगी मुझे उसकी हंसी। सच पूछिए तो इस हंसी ने ही काफी कम कर दी हमारे बीच की दूरी। बाद में थोड़ी देर इधर-इधर की बातें करने के बाद वह चली गई।

अगले दिन सुबह हम दोनों फिर उसी तरह खड़े थे अपनी-अपनी गैलरी में। पिछले दिन चूंकि हमारा बाकायदा आपस में परिचय हो चुका था, इसलिए आज हम एक दूसरे की ओर निःसंकोच भाव से देख भी सकते थे।

मीना काफी गोरे रंग की एक आकर्षक युवती थी। सुकुमारता में वह फूलों से होड़ लेती थी। कद लंबा, चेहरा सुन्दर और आंखें बड़ी-बड़ी थीं। मुंह का कटाव छोटा ही था। उसकी हंसी में लज्जत भी, बात करने में एक अदा, एक नजाकत।

हमारा परिचय होने के दूसरे दिन एक आवश्यक पत्र का इन्तजार था मुझे। जैसे ही पोस्टमैन आता दिखाई पड़ा, मैं सीढ़ियां उतर कर नीचे जा पहुंचा, किन्तु बड़ी निराशा हुई मुझे, जब उसने बताया कि मेरा कोई पत्र नहीं आया था उस दिन। मैंने भगवान से मनाया कि आज मीना का भी कोई पत्र न आया हो, लेकिन दूसरे ही क्षण पोस्टमैन ने एक नीला लिफाफा थमा दिया मीना को। मुझे चिढ़ाने के लिए मीना ने दाएं हाथ में पत्र लिए और अपने बाएं हाथ का अंगूठा मुझे दिखाया। फिर हंसती हुई वह अन्दर भाग गई।

मैं उसकी खाली गैलरी की तरफ देखता रह गया भौंचक होकर और सोचता रहा, 'एक ही दिन के परिचय में यहां तक हिम्मत बढ़ गई इस लड़की की !'

उस दिन अचानक एक ऐसी चीज की तरफ मेरा ध्यान आकृष्ट हुआ, जिसे एक लेखक की नज़र के बावजूद भी मैं पहले नही देख पाया था। मीना ने अपने बाएं हाथ की कुहनी तक लाल-लाल, पतली-पतली चूड़ियां पहन रखी थीं। उन लाल-लाल चूड़ियों में उसके गोरे हाथ का सौन्दर्य और भी खिल उठा था। कांच की उन पतली-पतली चूड़ियों की खनक भी बहुत ही मधुर थी, जो उस समय हुई थी, जब उसने अंगूठा दिखा दिया था मुझे। उस दिन से उसके बाएं हाथ को गौर से देखने की आदत पड़ गई मुझे।

मीना अक्सर ही मेरे कमरे में आ जाती थी और अपनी आदत के मुताबिक सबसे पहले मेरी नजर उसके बाएं हाथ पर ही पड़ती थी।

एक दिन इसी तरह जब वह आई तो मैंने देखा कि उसके बाएं हाथ में कुहनी तक लाल की जगह नीली चूड़ियां थीं। एक हाथ में इतनी अधिक चुड़ियां पहनने का यह फैशन मुझे बहुत ही हास्यास्पद लगा। बरबस ही मुझे हंसी आ गई। मुझे हंसते

(शेष पृष्ठ १२ पर)

परोपकारी

परोपकारी···
कौन सदानन्द जी ? कहिये क्या हाल है ?

हाल तो बस बुरा ही है, पिछले छः महीने से व्यापार में घाटा ही हो रहा है।
देखने में भी बेचारा कितना कमजोर लग रहा है. हो सकता है बेचारे ने कुछ रोज से खाना भी न खाया हो।

मेरा पार्टनर भी मेरा साथ छोड़ गया है। सारा घाटा मैं ही उठा रहा हूं।
यह तो बड़ी बुरी खबर है। कहिए क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूं ?

हां, हो सके तो जरा दस पैसे देना !
हां, हां क्यों नहीं ?
दस पैसे में शायद बेचारा चने खायेगा।

दस पैसे क्या, मैं आपको दस रूपये देता हूं, ताकि कम से कम आप ठीक से भोजन तो कर सकें।
तुमने मुझे क्या भिखारी समझ लिया है ? मैं डाइटिंग कर रहा हूं। इस लिए मशीन पर अपना भार देखना चाहता हूं। क्योंकि चेंज नहीं, सो दस पैसे मांग लिए, वर्ना दस हजार तो मैं अभी भी तुम जैसों पर लुटा दूं।

बात-बे-बात की

मैं ने एक बहुत बढ़िया उपन्यास लिखा था, लेकिन मेरे लड़के ने उसे उठा कर आग में फेंक दिया।

तुम्हारा लड़का कितना बड़ा है ?
चार साल की उम्र का है।

तुम खुशनसीब हो कि तुम्हारा लड़का इतनी सी उम्र में काफी समझदार हो गया है।

देख मीना जरा चकराती हुई बोली—'हंस क्यों रहे हैं आप ?'

'गंवार स्त्रियों की तरह अपने बाएं हाथ में कुहनी तक चूड़ियां पहनने का फैशन देखकर।'

'इसमें इतना हंसने की क्या बात है ? यह फैशन तो अब पुराना पड़ चुका है।'

'यह फैशन पुराना पड़ गया है, इसीलिए तो इतनी हंसी आई मुझे। वैसे, शहरों के नवयुवक तो इन्तजार ही कर रहे हैं कि गंवार मजदूरिन स्त्रियों की वेशभूषा वाला अगला फैशन तुम लोग कब से अपनाने जा रही हो।'

'मजदूरिन स्त्रियों की वेशभूषा वाला अगला फैशन ? कौन-सा ?' उसने इस ढंग से पूछा, जैसे वह मेरी बात समझी नहीं।

मैंने सरलता से कह दिया—'वही, बदन के ऊपरी भाग पर चोली या ब्लाउज नहीं पहनने का उनका फैशन।'

वह पहले तो खिलखिला कर हंस पड़ी, फिर एकदम गम्भीर हो गई।

मुझे लगा कि मेरी यह बात उसे पसन्द नहीं आई। मैंने फौरन कहा—'माफ करना मीना, मेरी बात थोड़ी अश्लील लगी होगी तुम्हें।'

'थोड़ी क्या, बहुत अश्लील है आपकी बात।'

'नाराज हो गईं ?' मैंने माफी मांगने जैसे स्वर में कहा।

'नहीं तो। आप लेखक हैं न, कुछ हद तक अश्लील बातें करने का भी अधिकार है आपको।' और यह कहकर वह फिर हंस पड़ी।

मैं हंस तो न सका, लेकिन लगा, जैसे एक बोझ उतर गया सीने से।

'तो जिन युवतियों से आप बातचीत करते हैं, उनके हाथों पर काफी ध्यान रहता है आपका।' वही फिर बोली।

'और दूसरी तरफ ध्यान देने से, हाथ पर ध्यान देना ही अच्छा नहीं है क्या ?' हंसते हुए मैंने कहा, 'और चूंकि मैं लेखक हूं, इसलिए दूसरे लोगों की अपेक्षा अधिक अधिकार भी है मुझे, स्त्रियों को गौर से देखने का।'

'अच्छा, तो लेखक होने के नाते बहुत ज्यादा रियायतें पाना चाहते हैं आप··· क्यों ?' वह मुस्कुराकर बोली···'तब तो अब मुझे आपके यहां आना-जाना कम करना चाहिए। कौन जाने किसी दिन आप मुझे ही नायिका बनाकर कोई अश्लील प्रेम कहानी लिख डालें ?'

'खैर, यह आशंका त्याग दो तुम।' मैंने कहा।

'क्यों ?'

'किसी साधारण लड़की पर कहानी नहीं लिखता मैं।'

'मैं क्या साधारण लड़की हूं ?'

'असाधारण भी तो नहीं हो।'

'असाधारण न सही, पर औसत से भिन्न तो हूं ही ?'

'मिथ्या भ्रम हो गया है तुम्हें।'

'क्या कहा ?'

'कहूंगा क्या ? यही कह रहा था कि अपने बारे में गलत धारणा बना बैठी हो तुम।'

'मेरी धारणा गलत हो सकती है, पर मेरी बुआ तो कहती हैं···'

'अजी बुआ क्या जानें भला ? उनमें अक्ल ही कितनी है ?' मैंने मन-ही-मन कहा।

'कुछ कहिए न, आप चुप क्यों हो गए ?' वही फिर बोली।

'क्या कहूं ? लम्बे अनुभव के बाद तुम्हारी बुआ के बारे में जो धारणा मैंने बनाई है, क्या उसे सच-सच बता दूं ?'

'बहुत ही भद्दे तरीके से न बताने वाले हो तो बताइए।'

'तुम्हारी बुआ में समझदारी बहुत कम है। यानि कि उनमें 'अंडरस्टेंडिंग' की जरा कमी है···फिर भी, तुम जैसी साधारण लड़की पर तो मैं कहानी नहीं लिख सकता।'

'मैं जिद पकड़ लूं, तब भी नहीं ?'

'ऊं हूं। असंभव है। मैं एक बार ऐसा कर दूं तो रास्ते का हर ऐरा-गैरा अपने ऊपर कहानी लिखने के लिए मुझ से कहने लगेगा।'

'मैं क्या 'रास्ते की ऐरी-गैरी' हूं ?' मीना तुनक गई।

'नहीं, मैं मानता हूं कि तुम रास्ते की ऐरी-गैरी नहीं हो, बिल्कुल घर की हो, फिर भी तुम में असाधरणता क्या है ? तुम्हीं बताओ, जिस व्यक्ति पर कहानी लिखी जाए, उसका जीवन विशिष्ट घटनाओं से परिपूर्ण होना चाहिए या नहीं ?'

'मुझ जैसी लड़कियों के जीवन में वैसी कोई घटना न घटे, तो क्या हम पर कहानी लिखी ही नहीं जा सकती ?'

'मेरा तो कुछ ऐसा ही ख्याल है।' शान्त स्वर में मैंने कह दिया।

'मैं ऐसा नहीं मानती।' वह दृढ़तापूर्वक बोली।

'ठीक है, हर व्यक्ति को अपनी राय कायम करने का पूरा अधिकार है।' मैंने कहा, 'लेकिन मैंने बताया न, कि मेरा सिद्धान्त ही यह है कि मैं असाधारण व्यक्तियों पर ही कहानी लिखता हूं।'

मीना तुनक कर चली गई। फिर चार दिन बीत गए, इस विषय पर उससे कोई बात नहीं हुई मेरी।

पांचवें दिन वह एक कापी लेकर आई और उसे मेरे हाथ में देकर बोली—'मैंने एक कहानी लिखी है, देखकर बताइए कैसी है ?'

'लाओ। कल सवेरे तक पढ़कर बताऊँगा।'

मीना थोड़ी देर बैठकर, इधर-उधर की बातें करने के बाद, एक किताब पढ़ने के लिए लेकर चली गई।

अगले दिन वह बड़ी उत्सुकता से आई। आते ही पूछ बैठी—'कैसी लगी आपको मेरी कहानी ?'

'सच बताऊं या झूठ ?'

'सच ही बताइए।'

'बताता हूं, पर नाराज तो नहीं हो जाओगी ?'

'नहीं, नहीं होऊंगी नाराज। आप बताइए।'

कहानी एकदम साधारण स्तर की है। बोलचाल की भाषा में कहा जा सकता है कि बिल्कुल रद्दी है।'

यह सुनकर मीना का चेहरा उतर गया।

'क्या मैं कभी लेखिका नहीं बन सकती ?' उसने निराशा भरे स्वर में पूछा।

'बन क्यों नहीं सकतीं ?' सवाल का जवाब सवाल से ही दिया मैंने।

'कैसे बन सकती हूं ?'

'बहुत आसानी से।'

'सच।' खुश होकर उसने पूछा।

'हां, चुटकी बजाते, पर कहानियां लिख कर नहीं।'

'तब कैसे बन सकती हूं ? आप तो पहेलियां बुझा रहे हैं।' उसकी उत्कंठा बांध

शेष पृष्ठ ३८ पर

कमाल है, थम दोनों जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता होते हुए भी चिकमगलूर नहीं गये ? तानाशाही शक्तियों से टक्कर लेने तुमको तो सबसे पहले पहुंचना चाहिये था । जब-जब भी जनतंत्र को खतरा पैदा हुआ थम दोनों ही कमर कस कर खम ठोंक कर और बाँहें चढ़ा कर मैदान में आते रहे हो जैसे गीता में श्री कृष्ण जी ने कहा है जब-जब धर्म खतरे में होता है मैं जन्म लेता हूं ।

कृष्ण जी को क्रिकेट टैस्ट मैच देखने या कमांट्री सुनने का शौक नहीं होगा, तभी वह जब-जब धर्म खतरे में होता है तो जन्म लेते हैं । जब क्रिकेट टैस्ट मैच होते हैं तो हमें दुनिया की किसी और चीज से मतलब नहीं होता । इन्दिरा गांधी के जीतने-हारने से लाहौर की पिच पर कौन सी गेंदें स्पिन होने लगेंगी ।
उम्मीदें धरी रह जायेंगी बेटा !
अभी-अभी कमांट्री आई कि पाकिस्तान के कप्तान मुस्ताक ने टॉस जीता और भारतीय टीम को बैटिंग करने के लिए कहा है । अभी गावस्कर और चेतन चौहान भारतीय पारी की शुरूआत करने मैदान में आ रहे हैं । मुस्ताक को ओस से भीगी इस पिच पर अपने फॉस्ट बॉलरों से बोत उम्मीदें हैं ।
जब म्हारे भंडारी थामसन को खेल गये तो ये किस खेत की मूली है ?

ऐंह !
र यह गावस्कर आउट, पांच रन
कर । वह सलीम अल्ताफ की
को फारवर्ड खेले । गेंद आउट-
गर थी । बल्ले को छूती हुई सीधे
माजिद खां के हाथों में··

भारतीय टीम की नींव ही उखड़ गई ! जब फाउंडेशन स्टोन ही नहीं रहा तो मकान कैसे बनेगा ? भारत की इनिंग्स का सारा दारोमदार गवास्कर पर रहता है । भारतीय इनिंग्स विधवा हो गई उसने पिच पर अपनी चूड़ियां तोड़ दीं ।
हूं हूं !

ग्रौर १६ के स्कोर पर चेतन चौहान भी ग्राऊट । इमरान ने उनको क्लीन बोल्ड कर दिया । उन्होंने डिफेंसिव खेलते हुए बाल को ग्रपनी विकेटों की तरफ मोड़ दिया…

चौधरी लोगों, इतनी जल्दी धीरज मत खोग्रो ! दो खंडारी गये तो क्या हुग्रा, ग्रभी तो ग्राठ खंडारी बाकी हैं । कोई भी ग्रड़ गया तो पारी संवर जायेगी । यह ले सैंधा नमक सूंघ ले ! होश ग्रा जायेगा । जब चरणसिंह ग्रौर राजनारायण के जाने से जनता सरकार का कुछ नहीं बिगड़ा तो गावस्कर ग्रौर चेतन चौहान के जाने से ही कौन सी भारतीय पारी बिखर जायेगी ? उठो, थमको बचपन में खाये बथुये के साग ग्रौर गेहूं चने की मिस्सी रोटी की कसम ।
कोई मुझे जहर ला दे ।
इस बीच सुरेन्द्र ग्रमरनाथ ग्राऊट हो गये हैं ।

हमारी पूरी टीम १६६ रन बनाकर ग्राऊट हो गयी है । सबसे ज्यादा दिलीप वेंगसरकर ने बनाये ७६ रन ! ग्रौर लंच से पहले इमरान की एक गेंद ग्राकर मोहिन्दर ग्रमरनाथ के सिर पर लगी । वह भाई वहीं क्रीज पर लम्बा पड़ गया । कहते हैं कि जादा चोट नहीं लगी । ग्रच्छा हुग्रा थम दोनों बेहोश थे उस वक्त वर्ना ग्रौर जादा बेहोश हो जाते । थारे सिर पर रखने के लिए मैंने ग्रौर एक मन बर्फ का ग्रार्डर दे दिया है ।

खैर कोई बात नहीं, मुझे पूरी उम्मीद है कि म्हारे बॉलर ईंट का जवाब पत्थर से देंगे । आठ-दस खंडारी तो कपिल देव ही आऊट करेगा । म्हारे गाम का लमडा है । दुनिया को हिला कर रख देगा ! हिन्दुस्तान मां फास्ट बॉलर हरयाणे में ही पैदा हो सकते हैं । देसी घी-सक्कर की खुराक मिलती है न !
उसके ऊपर हमारे धुरंधर स्पिनर हैं जिनके सामने दुनिया के बड़े-बड़े बैटसमैन चक्कर खा गिये । दो-तीन ओवरों में ही वह सारी टीम को आऊट करने की ताकत रखते हैं । च च चः मुझे तो यह देखते हुए लगता है कि पाकिस्तान बीस रन भी नहीं बना पायेगा ।
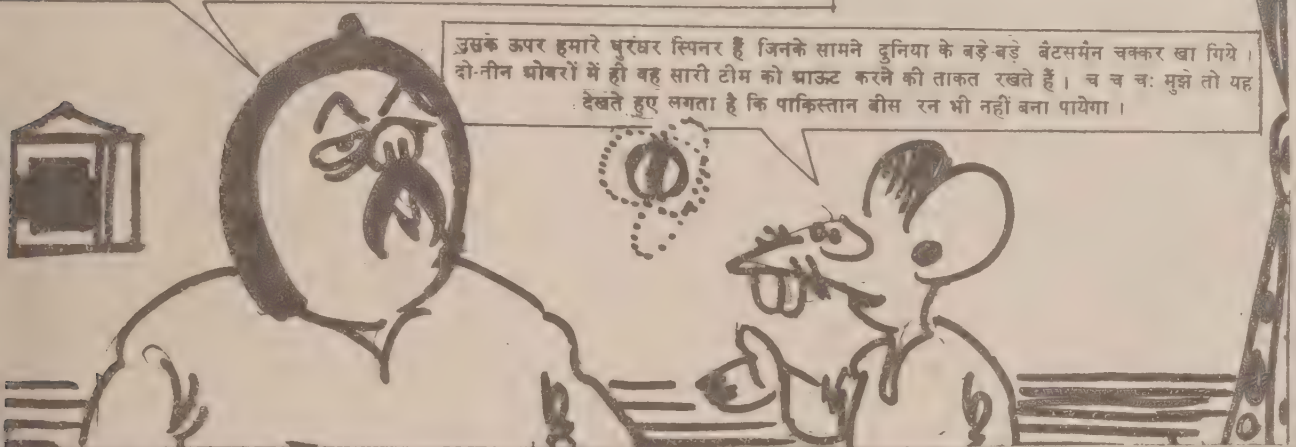
पाकिस्तान ने पांच विकेटों पर ५०० रन बनाये हैं । मैंने हम दीवाना पढ़ने वालों का ख्याल करके इनके ऊपर कम्बल और डी. सी. एम. के चद्दर डाल दिये हैं। वर्ना हम इनकी शक्लें देखकर दीवाना पढ़ना छोड़ भाग जाते । इनकी बड़ी बुरी हालत हो रही है । बीस रनों पर सारी पाकिस्तानी टीम को आऊट करने की इनकी उम्मीदों पर बर्फ का ठंडा पानी फिर गया है ।
और पाकिस्तान के यह पांच सौ बीस रन !

चूहे, तू जा वकील को बुला कर ले आ !
क्यों ? जहीर अब्बास के खिलाफ मुकदमा लड़ेगा ।
नहीं, पहले वसीयत कर जाऊंगा । म्हारी टीम ३४० रनों से पिछड़ गई है । एक पारी की हार से बचना संभव नहीं है । मैं यह नजारा नहीं देख सकूंगा ।

हमारे बैट्स मैन भी कम नहीं हैं । इतनी जल्दी धीरज नहीं खोना चाहिए । गावस्कर चाहे तो सैंकड़ों रन बना सकता है और उसका जीजा विश्वनाथ भी तो है । दोनों जीजा साले मिल कर पाकिस्तान के बॉलरों की धज्जियां उड़ा सकते हैं । दोनों देखने में छोटे हैं लेकिन दोनों जितने छोटे हैं उतने ही खोटे हैं ।
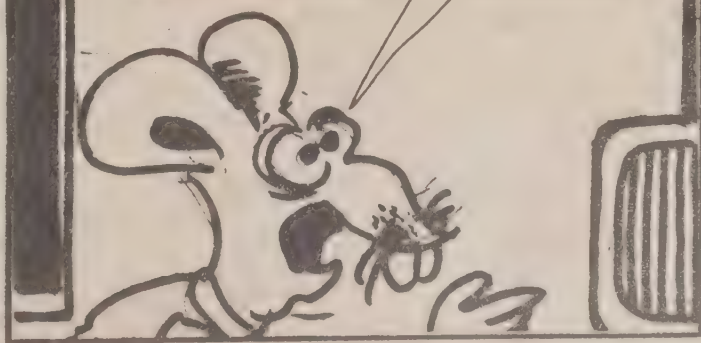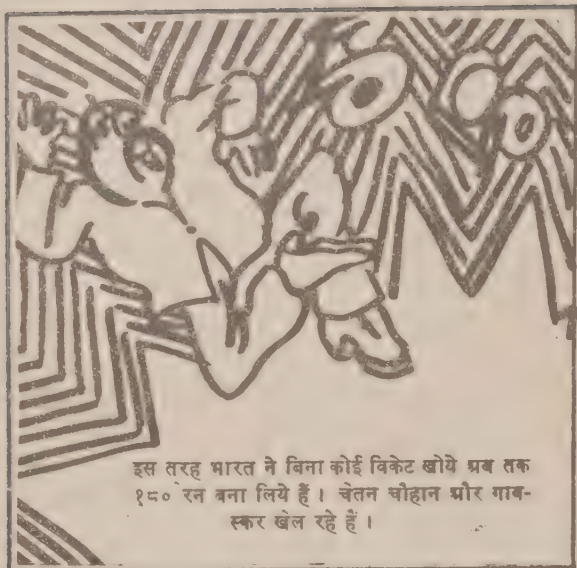
सिलबिल - पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में
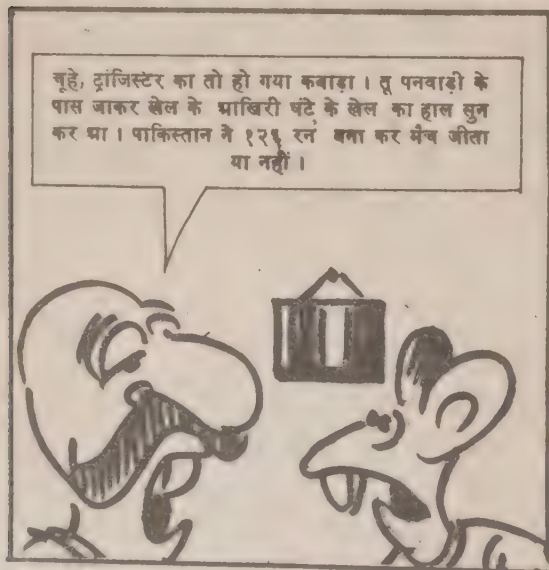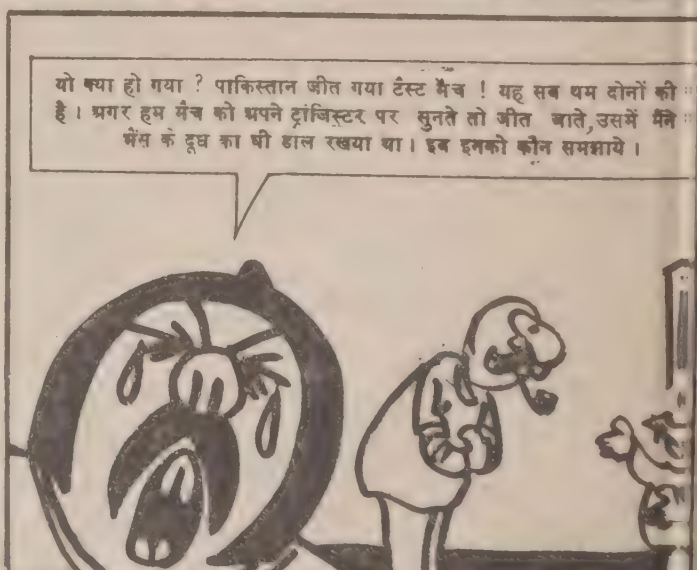
१६ अक्तूबर का दीवाना प्राप्त हुआ। वैसे तो दीवाना का हर अंक अद्वितीय होता है परन्तु जिस अंक में फिल्म पैरोडी होती है तो उस अंक में बहुत अधिक मजा आता है, इस अंक में अड़जाने में, दशहरे पर नेताओं के उद्गार, विभागों के दीवाने प्रतीक फीचर बड़े ही शानदार लगे। दीवाना कार्ड, मदहोश, चिल्ली लीला, पिलपिल-सिलबिल के बारे में कुछ कहना तो सूर्य को टार्च दिखाने वाली बात होगी। फिर भी यदि क्यों और कैसे व खेल-खेल में की जगह 'मनोरंजन स्ट्रीट' प्रकाशित करें तो चार की बजाय आठ चांद लग जाएँगे।

रमेशचन्द्र राजेश—जनौली

आज 'दीवाना' के एक साथ दो नये अंक ३१ और ३२ प्राप्त हुए। दुगनी खुशी हुई इन दो अंकों को पाकर। दोनों अंकों में चिल्ली जी महाराज का भिन्न-भिन्न रूप, एक मूंछ वाला तथा दूसरा सफाचट देखकर बस मजा ही आ गया। इन दोनों अंकों के मिले जुले आकर्षण ये थे—'टैस्ट ट्यूब का कमाल', 'विनोद खन्ना का सन्यास', 'सवाल यह है ?,' 'जनता मंत्री नेताओं के नामों के साथ दीवाना खिलवाड़', 'फिल्म स्टारों के व्यंग चित्र', 'मंत्री जी का रामराज्य', 'यादों की गलियां', 'अच्छी सर्विस'।

श्याम माहेश्वरी 'अशोक'—फारबिसगंज

बुक स्टालों के चक्कर लगाते-लगाते आखिर दीवाना अंक ३४ के दर्शन हुये। हमें खुशी है कि हमें अब दीवाना सही वक्त से एक-दो दिन पहले ही मिल रहा है दीवाना की हर सामग्री काबिल-ए-तारीफ थी मुख पृष्ठ बहुत अच्छा था। पिलपिल-सिलबिल की काफी दुर्गति बनी और घसीटा राम की यात्रा भी बहुत शुभ रही। बच्चा झमुरा, फैंटम, मदहोश, पंचतंत्र, फीचर, अच्छे लगे, साइकिल का चक्कर, सरकारी कुत्ता कहानियां बहुत अच्छी लगीं। आशा है अगला अंक भी वक्त पर मिलेगा। और रोचक होगा। **जुबेर अहमद—नई दिल्ली**

"दीवाना" का ३२ वाँ अंक पढ़ा। सम्पादक जी, सचमुच "दीवाना" पढ़ने पर "दीवाना" के दीवानों को सिर्फ "दीवाना" का दीवानापन ही सूझता है।

"दीवाना" जैसी हास्यपत्रिका में "मोटू-पतलू" की जासूसी देखकर काफी दुःख होता है। कृपया कर अब "मोटू-पतलू" जासूसी न देकर हास्यप्रद देवें। "प्रेम-पत्र" में चिल्ली से फिल्मी कलाकारों के पास भी पत्र लिखने को कहियेगा। अगले अंक के इंतजार में—

अजय कुमार गुप्ता—तपकरा (म.प्र.)
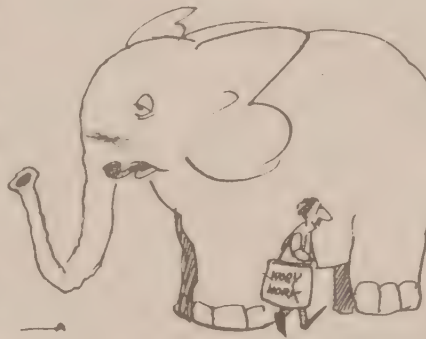
अंक ३२ प्राप्त हुआ। पढ़कर आनन्द से दीवाना हो गया। 'सिलबिल-पिलपिल' में 'सिलबिल' का बर्थ डे देखा, हँसी के फव्वारे छूट गए। 'मोटू-पतलू' में अक्लमन्द 'उल्लू' के कारनामे देखे। कहानियों में से—'पुरानी तरकीब की मौत', 'मन्त्री जी का राम राज्य', 'यादों की गलियाँ' बेहद रोचक लगीं। धारावाहिक उपन्यास का नवां भाग रोचक लगा। अन्य सभी स्थाई स्तम्भ रोचक लगे, इसमें से पंचतंत्र, और चिल्ली लीला बेहद अच्छे लगे। अन्तिम पृष्ठ पर 'शशि-कपूर' का रंगीन चित्र अच्छा लगा। कृपया साप्ताहिक भविष्य नामक स्तम्भ को हटाकर और कोई स्तम्भ चालू करें। मैं 'दीवाना' को बाल पत्रिकाओं की रानी समझता हूँ।

मोहम्मद लईक खाँ 'टोंकी'—(राजस्थान)

दीवाना अंक ३४ में मुख पृष्ठ पर चिल्ली का रक्तदान वाला चित्र देख कर मन गार्डन-गार्डन हो गया। अगर चिल्ली जैसे रक्तदान करने वाले हमारे देश में पैदा हो जायें तो जन संख्या विस्फोट की समस्या यूं ही सुलझ जायेगी। 'अनजाने में' की फिल्म पैरोडी बेहद मनोरंजक लगी। लगता है घसीटाराम जी की शुभ यात्रा का अशुभ होना उनका बीस साल का तजुर्बा ही है। 'दशहरा के शुभ त्यौहार पर प्रसिद्ध नेताओं के दीवाने उद्गार', सिलबिल-पिलपिल, हास्य कथायें एवं सभी स्तंभ अत्यन्त रोचक मनोरंजक लगे। बच्चा झमूरा की अपनी ही सलाह पर हुई दुर्गति देख कर लगता है कि ये महाशय परोपकारी के चेले हैं।

डा० सतीन्द्र जैन—जेबरा (म० प्र०)

दीवाना 'धमाका विशेषांक' प्राप्त हुआ। इस बार दीवाली उपहार, यह कैसी दीवाली आज की, दीवाली पर क्या टिप दें ? फिल्म स्टारों के ग्रीटिंग कार्ड फीचर धमाकेदार रहे। परोपकारी, चिल्ली लीला, मदहोश की कमी कुछ अनुभव हुई। परन्तु पिलपिल-सिलबिल पढ़ कर कुछ हद तक निराशा हट गई। काका के कारतूस व आपस की बातें पढ़ कर तो इतनी हंसी आई कि हंसते-हंसते पेट फट गया। **सतीश—जनौली**

दीवाना का अंक नं० ३५ बहुत ही रोचक लगा। मुख पृष्ठ से ही दीवाना की कीमत वसूल हो गई। चिल्ली लीला व दीवानी चिपकी अब की बार बहुत ही सुन्दर लगे। प्रेम-पत्र भी हंसाने में पूर्णतया सफल रहा। फिल्मी पुरस्कार और 'हम देखना चाहते हैं' बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया। बच्चा झमूरा व मोटू-पतलू के कारनामे भी अच्छे रहे। दीवाना में अगर आप नई फिल्में 'शालीमार' या 'मुकद्दर का सिकन्दर' की पैरोडी दे दें तो दीवाना में चार चाँद लग जायें। **राम दीपक 'स्नेही' सिरसा**

दीवाना अंक ३५ आज सही समय पर प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ काफी आकर्षक लगा, दीवाना जो कि दीवाना पाठकों के लिए एक खजाना है। हमें उस खजाने में अब की काफी रोमांचक सामग्री देखने को मिली। दीवाना, दीवाना प्रेमियों के लिए हमेशा खुशियां बरसाती रहे, बस यही मुझ पाठक की इच्छा है। आप काका के कारतूस, चाचा बातूनी, क्यों और कैसे एवं आपके पत्र स्तम्भ में बीच-बीच में कार्टून देते हैं। यदि यह कार्टून न दिए जाए तो कई और पाठकों के प्रश्न प्रकाशित हो सकते हैं, आप कार्टूनों का एक स्तम्भ चालू करें, जिसमें पाठकों द्वारा भेजे गए कार्टून प्रकाशित हों, तो बेहतर है।

मिठाई लाल, देवराज, कमल—माडल टाउन

मारधाड़ और खून खराबे से भरी मोटू पतलू की जासूसी फिल्म ।

फिल्म की कास्ट
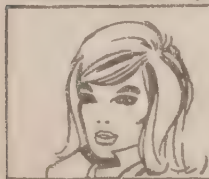
रोजी : एक कैबरे डांसर, जिसकी हत्या कर दी गई ।

शैली : एयर होस्टेस, रोजी की सहेली ।
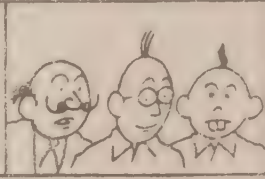
मोटू, पतलू, चेलाराम : फिल्म के जासूस ।

डाक्टर जीरो, शाईकांग, मैनेजर : खतरनाक षडयंत्रकारी गैंग के संचालक ।
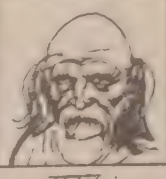
राहुल : ज्वाला द्वीप का मालिक ।

पिछले दिनों कैबरे डांसर रोजी ने एक षड्यंत्रकारी गैंग के चक्कर में फंस कर एक जर्मन वैज्ञानिक की फाइलों के राज अपने कैमरे की फिल्म पर चुराये थे, पर यह राज वह गैंग को देना नहीं चाहती थी, कैमरे की फिल्म उसने एक खिलौने में छुपाकर अपनी सहेली शैली को दे दी थी । इस पर गैंग के एक लीडर शाईकांग ने रोजी की हत्या कर दी थी और वह उसकी सहेली से वैज्ञानिक राज वाली फिल्म ले उड़ा था, इस केस की छानबीन करते हुए डिटैक्टिव चेलाराम गैंग के हत्थे चढ़ गया था । मोटू, पतलू ने उनका पीछा किया था तो उनका जहाज एक द्वीप पर गिरा लिया गया था । यहां पतलू तो गैंग की पकड़ में आ गया था, पर मोटू ने खाई में गिरती एक गाड़ी से द्वीप के मालिक राहुल की जान बचाई थी और अब उसका मेहमान बन गया था । इसके बाद आगे की रंगीन फिल्म देखिये ।

तुमने मुझे मौत के मुंह से बचाकर नया जीवन दिया है, इसलिए मैं तुम्हें अपना वह राज बता रहा हूं जो मैंने आज तक किसी को नहीं बताया ।

तुमने मेरा जीवन बचाया । सच पूछो तो जीवन ही मेरा सबसे बड़ा राज है । तुम मेरी उम्र सत्तर, अस्सी या नब्बे साल समझ रहे होंगे । वास्तव में मेरी उम्र एक सौ साठ साल है ।

हाँ, पूरे एक सौ साठ साल । तुम इसे प्रकृति का चमत्कार कह सकते हो । जादू कह सकते हो । पर यह हकीकत है और यह भी हकीकत है कि इतनी लम्बी उम्र के बाद मैं किसी पल भी मर सकता हूं ।

बचपन में जब मैंने होश सम्भाला तो पता चला कि मैंने मछेरों के घराने में जन्म लिया है । जवान होने पर मैं समुद्र से सिप्पियां निकालने और मोतियों का व्यापार करने वाले एक ठेकेदार का गोताखोर बन गया और उसके मरने के बाद उसका पूरा कारोबार मैंने सम्भाल लिया । वास्तव में मुझे पहली बार यह अनुभव हुआ कि आदमी पैदा होता है तो एक रोज मरता भी है । उन्हीं दिनों समुद्र की गहराई में दूर तक गोता लगाते समय मुझे एक तिजोरी मिली । शायद वह सैंकड़ों साल पहले किसी जहाज के सामान के साथ वहां डूबी थी तिजोरी खोलकर देखी तो वह सोने से भरी थी । उस सोने से मैंने यह द्वीप खरीद लिया । उन दिनों अंग्रेजों को सोना चाहिये था और मुझे ऐसा द्वीप जहां मैं किसी के हस्तक्षेप के बिना जो चाहूं कर सकूं और भविष्य में फिर मुझे समुद्र से सोना मिले तो वह स्वतंत्र रूप से मेरा ही हो ।

मैंने यहां लोगों को गुलाम बनाकर बसाया और समुद्र से मोती निकालने के काम को और बढ़ाता चला गया । जब मेरी उम्र एक सौ दस साल की हुई तो यह सोचकर आश्चर्य हुआ कि मैं अब तक मरा क्यों नहीं और अगर मैं नहीं मरा तो क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मैं कभी न मरूं ?

एक बार मैं मोतियों का सौदा करने जापान गया तो वहां मेरी मुलाकात डा० जीरो से हुई । उसने मुझे बताया कि वह एक ऐसे यंत्र पर अपने वैज्ञानिक प्रयोग कर रहा है जो मनुष्य को अमर बना देगा । इसके लिए डा० जीरो को धन की और ऐसी जगह की आवश्यकता थी जो दुनिया से बिल्कुल अलग हो । मेरे पास यह दोनों चीजें मौजूद थी और मैं चाहता था कि किसी भी प्रकार यह सम्भव हो जाए कि मैं कभी न मरूं ।

डाक्टर जीरो ने मेरे द्वीप पर आकर अपने यंत्र पर प्रयोग शुरू कर दिये। इसे एक राज बनाये रखने के लिए मैंने अपने को दुनिया से अलग करके सबसे नाता तोड़ लिया। मेरे आदमी किसी को इस दुनिया पर नहीं आने देते, कोई आता भी है तो वापस नहीं जाता। इस काम के लिए डाक्टर जीरो संसार के कई बड़े-बड़े वैज्ञानिकों का अपहरण करके उन्हें यहाँ लाया है। उसके आदमी कई जहाजों और रेलों से अपने मतलब की मशीनें और वैज्ञानिक राज चुराते रहे हैं, मैं जानता हूं, यह अपराध है। पर अपने को अमर बनाने के लालच के सामने यह अपराध कुछ भी नहीं।

चलो मैं तुम्हें डाक्टर जीरो की प्रयोगशाला में ले चलूं, वहां तुम देखोगे की उसने संसार के बड़े-बड़े प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों से जबरदस्ती काम लेकर कैसी-कैसी भयंकर और

इनसे मिलो डाक्टर जीरो ! यह हमारे मेहमान हैं । समाचार पत्रों के रिपोर्टर मिस्टर गुप्ता ।

मिस्टर कुर्ता ? मुझ पजामे को यहाँ फंसा कर यह कुर्ता बन गया है ?

अमर करने वाला यंत्र बनने में अब कितनी देर है ?

समझो बन ही गया है । बहुत लगे तो दो-चार दिन और लगेंगे ।

वह तो ठीक है राहुल, पर आप दो कौड़ी के रिपोर्टर को क्यों मुंह लगा रहे हैं ?

यह दो कौड़ी का नहीं है डाक्टर । इसने मेरा जीवन बचाया है । जरा सोचो, मेरे पास यह जीवन न रहता तो तुम मुझे अमर कैसे बनाते ?

फिर भी आपने यह वादा किया था कि यंत्र को एक राज बनाये रखने के लिये हम इस द्वीप में किसी को नहीं आने देंगे । अब तक यहां आने वाला हर आदमी मारा जाता रहा है

इस बूढ़े को यही तो पता नहीं है कि इसके आदमी अब इसके आदमी नहीं रहे हैं।
मैनेजर भण्डारू !
जी सरकार।
जहां यह रिपोर्टर गुप्ता ठहराया जा रहा है, वहां कड़ा पहरा लगा दिया जाये और इस बूढ़े खूसट राहुल के महल पर भी।

राहुल जी, मुझे डाक्टर जीरो पर कुछ शक है। लगता है अमर यंत्र बनाने के चक्कर में वह कोई गड़बड़ कर रहा है।
तुम्हें वहम है, डाक्टर जीरो कोई गड़बड़ नहीं कर सकता। यह काम ही ऐसा है इसलिये तुम्हें ऐसा लगा है। डाक्टर जीरो पर मैं अपने से भी अधिक विश्वास करता हूं। मैंने तुम पर विश्वास किया तो क्या धोखा खाया? फिर डाक्टर जीरो को तो मैं बरसों से जानता हूँ।

तुमने उसकी प्रयोगशाला में दो आदमी देखे होंगे। एक लम्बे-लम्बे दो दांतों वाला और दूसरा ऐनक और लम्बी नाक वाला। डाक्टर जीरो का कहना है कि इनमें से एक की उम्र पिच्चासी साल और दूसरे की उम्र पिच्चानवें साल थी। अब देखो डाक्टर ने उनमें से एक को बच्चा और दूसरे को युवक बना दिया है।
यह दोनों बूढ़े थे ?
बच्चा बना दिया है ?? इतना बड़ा षड़यंत्र !!! फिर तो द्वीप के मालिक राहुल की लुटिया डूबने में जरा भी देर नहीं।
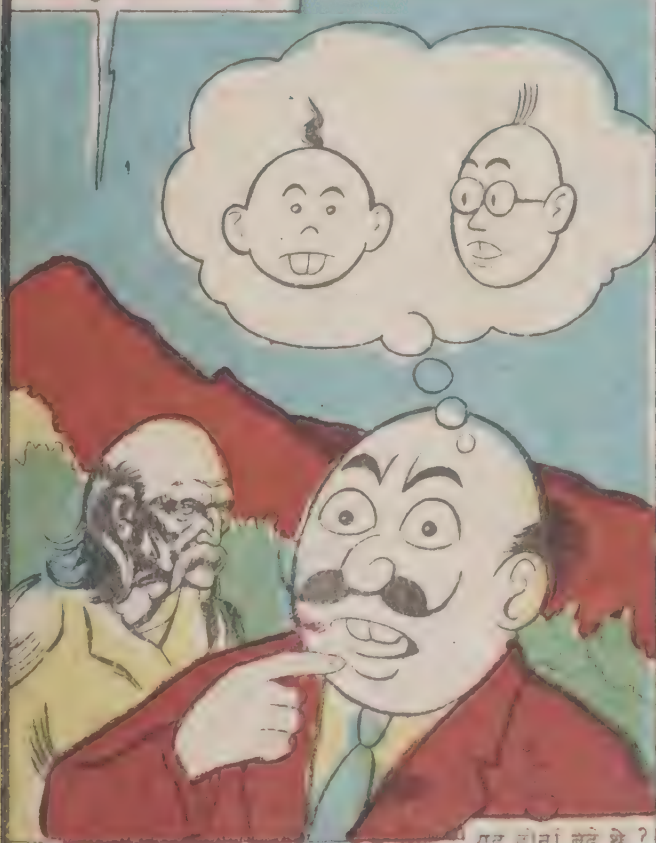
राहुल ने अपने मेहमान खाने में मोटू को ठहराया। रात को चारों ओर सन्नाटा था।
चेलाराम और पतलू की जान खतरे में है। बल्कि हम सभी मौत के मुंह में हैं। लगता है डाक्टर जीरो कोई विनाशकारी प्रयोग कर रहा है। मुझे कुछ करना चाहिये।
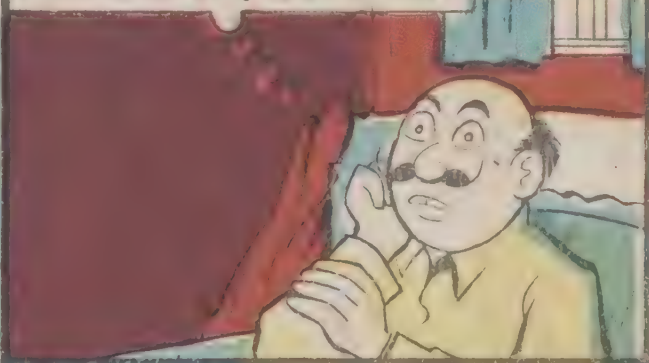
मोटू ने खिड़की से झाँक कर देखा तो…
दरवाजे पर पहरा है और खिड़की पर भी। डाक्टर जीरो के आदमी घेरा डाले हुये हैं। पर मुझे किसी भी तरह यहां से निकलना है।

बिना खटखट किये मोटू ने एक कुल्हाड़ी से लकड़ी के फर्श का तख्ता हटाया···
और एक तहखाने में कूद गया।

और वहां से एक रोशनदान के रास्ते बाहर निकल आया।
इस खिड़की से तो मैं निकलने, नहीं दूंगा उस आलू बुखारे को।
दरवाजे से निकला तो उस करेले को एक ही गोली से भून दूंगा।

तहखाने से निकल कर अब मोटू जंगल के रास्ते भागता हुआ डाक्टर जीरो की प्रयोगशाला की ओर जा रहा था।
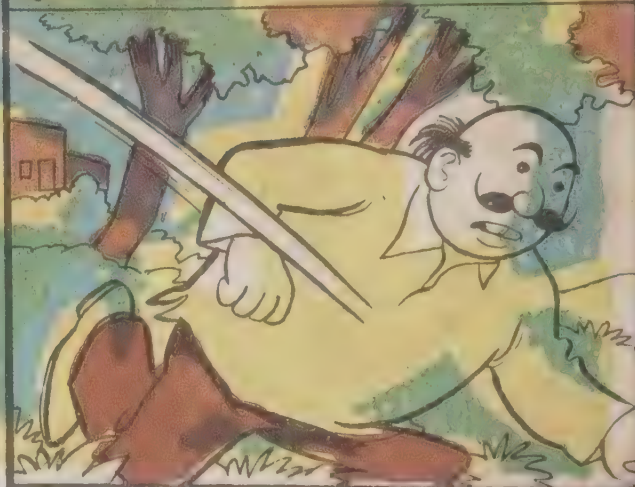
कई खतरनाक जगहों पर उसने अपने आपको बचाया। और प्रयोगशाला के पास पहुँच कर पहरेदारों की आंखों में धूल झोंकी।
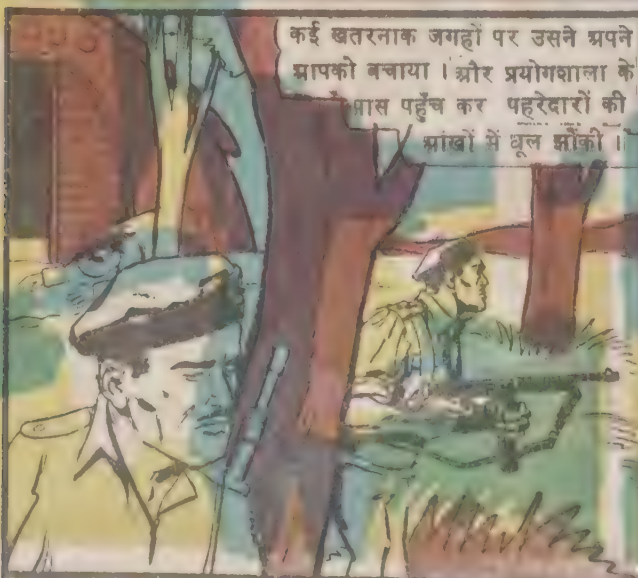
छुपता छुपाता वह आगे बढ़ रहा था। सुरंगों के यह चोर रास्ते उसे कहां ले जायेंगे, यह उसे पता नहीं था।

प्रयोग सफल हुआ ही समझो

बास डाक्टर! "हाई पावर सूक्ष्म धारा" ने उस जहाज को वहीं रोक दिया है।
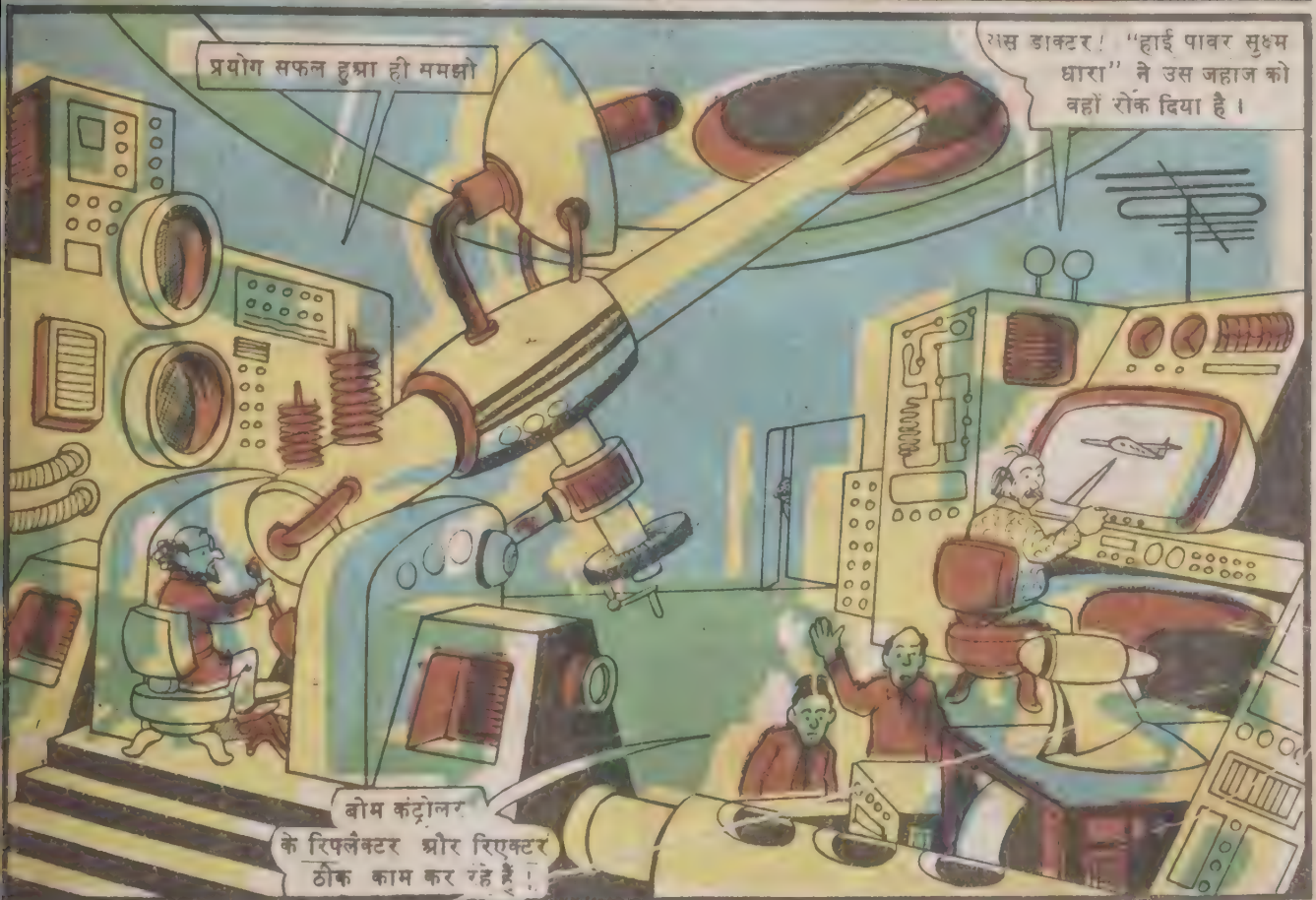
बीम कंट्रोलर के रिफ्लैक्टर और रिएक्टर ठीक काम कर रहे हैं।

कन्ट्रोल से भी कांट्रैक्ट टूट गया है। हम एक जगह लटक कर रह गये हैं।
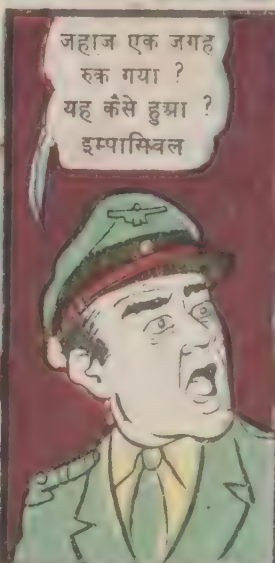
यह कैसे हुआ ? इन्जन बन्द होने से जहाज गिर भी नहीं रहा है।

उधर कंट्रोल रूम में।
राडार की रिपोर्ट क्या है ?
जहाज से कोई संदेश नहीं आ रहा है। वह हवा में एक जगह लटक कर रह गया है।

जहाज एक जगह रुक गया ? यह कैसे हुआ ? इम्पासिबल

जहाज को आग लग जायेगी।

एयरक्रेश हो जायेगा। सब मर जायेंगे ?

कहो तो एक्स्ट्रा हाई पावर बीम का बटन दबा कर जहाज को यहीं भून दूं ? इसका इतना निशान भी नहीं बचेगा जितना धुयें की लकीर का बचता है।
नहीं, जरा ठहरो।
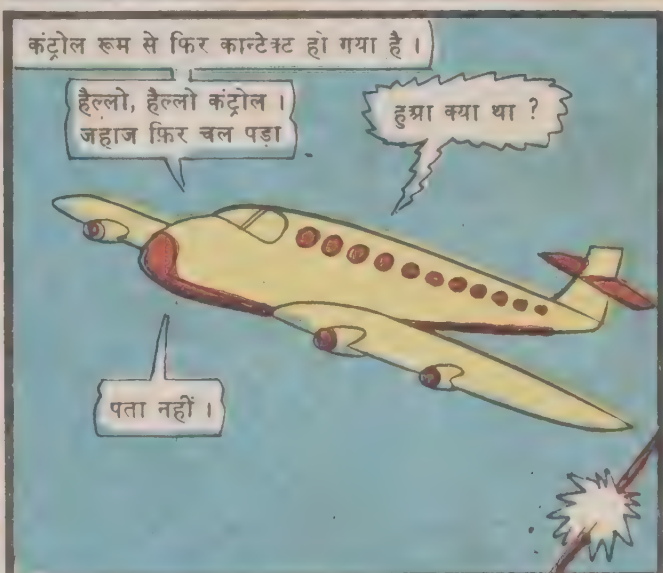
इससे अधिक भयंकर धमाकों के लिये आगामी अंक अवश्य खरीदियें।

बच्चा झमूरा मरता मर जाएगा। पर अगले सप्ताह आपको नया कारनामा दिखाने से नहीं चूकेगा।

भारत के दौरे पर आई वेस्ट-इंडीज टीम के खिलाड़ियों का परिचय !

१. कालीचरन, कप्तान—जन्म २१ मार्च १९४९, आयु २९ वर्ष, ४५ टैस्ट कुल ३३३१ रन, उच्चतम विकेट १५८ विरुद्ध इंग्लेंड, १० शतक।

२. बाक्चुस शेख फाउद एहामुल—जन्म ३१ जनवरी १९५४। बैटस मैन, अब तक कुल दो टैस्ट, बैटिंग का प्रदर्शन असंतोष-जनक रहा ! दल में श्रेष्ठतम फील्डर।

३. ऐरोल ब्राऊन—जन्म १६ जून १९५२ ऑफ स्पिनर, टैस्ट मैच कोई नहीं।

४. डेरेक रिकालडो पैरी—जन्म २२ दिसम्बर १९५४, आलराऊंडर, पांच टैस्ट, १९३ रन, उच्चतम स्कोर ६५, विकेट १२, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन १५ रन देकर पांच विकेट (ऑफ स्पिनर)।

५. डेविड मरें—जन्म २९ मई १९५०, विकेट कीपर, टैस्ट मैच ९, ६७ रन, ६ कैच और ३ स्पनिंग।

६. वैनबर्न होल्डर—जन्म ८ अक्तूबर, १९४५, ३४ टैस्ट मैच, ६०३ रन, १०१ विकटें होल्डर, मीडियम पेसर हैं। सर्वश्रेष्ट गेंदबाजी, २८ रन, देकर ६ विकेट विरुद्ध आस्ट्रेलिया १९७८।

७. जोहन रेन्डॉल लियोन—जन्म ४ मार्च १९५२, विकेट कीपर, टैस्ट मैच कोई नहीं।

८. मालकॉम डेंजील मार्शल—जन्म १८ अप्रैल १९५८, आलराऊंडर—फास्ट मीडियम पेस गेंदबाजी, टैस्ट कोई नहीं।

९. सिल्वेस्डर क्लार्क—जन्म ११ दिसम्बर १९५४, दल के सबसे तेज गेंदबाज, टैस्ट एक, जिसमें उन्होंने ६ विकटें लीं।

१०. रफीकजुमादीन जन्म—१२ अप्रैल १९४८, स्पिनर १० टैस्ट मैच, ३६ रन, २९ विकटें, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी, ७२ रन देकर ४ विकटें, विरुद्ध आस्ट्रेलिया १९७८।

११. आल्विन ग्रीनिज—जन्म २० अगस्त १९५६, आरम्भिक बल्लेबाज, श्रेष्ठ फील्डर, दो टैस्ट मैच, १४२ रन उच्चतम स्कोर ६९।

१२. हबर्ट चेंज—जन्म १६ जून १९५२, बांये हाथ के बल्लेबाज टैस्ट मैच कोई नहीं।

१३. लैरी गोम्ज—जन्म १३ जुलाई १९५३, बायें हाथ के बल्लेबाज और मीडियम पेस बॉलर, पाच टैस्ट मैच, २७६ रन, दो शतक व उच्चतम स्कोर ११५ रन, विरुद्ध आस्ट्रेलिया १९७८ किंगस्टन।

१४. नोरबर्ट फिलिप—जन्म २२ जून १९४९, ऑलराऊंडर, फॉस्ट बॉलिंग, ३ टैस्ट मैच, १२० रन, ९ विकटें, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन, ७६ रन देकर, ४ विकटें विरुद्ध आस्ट्रेलिया १९७८।

१५. शिवनारायण—जन्म १३ मई १९५३, बैटस मैन तथा बायें हाथ की स्पिन गेंदबाजी, टैस्टमैच ३, २१७ रन, उच्चतम स्कोर ६३, तथा एक विकेट।

१६. आल्वादोन विलियम—जन्म २१ नवम्बर १९४९, ओपनर बल्लेबाज, ३ टैस्ट मैच, २५७ रन, शतक एक विरुद्ध आस्ट्रेलिया १९७८।

टीम मैनेजर—जो सोलोमन

उपमैनेजर—रामचरित्तररिक

हाकी कैसे खेलें

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

पास देना

'पास' देने का सबसे सही समय तब होता है, जब प्रतिपक्षी खिलाड़ी गेंद खेलने वाले खिलाड़ी पर आक्रमण करे। मतलब यह हुआ कि उस खिलाड़ी ने एक प्रतिपक्षी खिलाड़ी अपने साथ उलझा लिया है ताकि उसका सहयोगी खिलाड़ी गेंद को कारगर ढंग से रोके और नियंत्रण कर सके। इससे पहले कि उसके साथी खिलाड़ी ऑफ साइड की स्थिति में हो जाएं, उसे उनकी गेंद सौंप देना चाहिए।

यह ध्यान रहे कि 'पास' की एक निश्चित गति हो। यदि पास की गति ठीक नहीं है तो गेंद प्रतिपक्ष के हाथों में पड़ने से नहीं बच सकती। 'पास' में तो गेंद को खिलाड़ियों की बीच की दूरी शीघ्रताशीघ्र तय कर लेनी होती है, परन्तु 'पास' देते समय गेंद प्राप्त करने वाले खिलाड़ी की गेंद रोक सकने की क्षमता का ध्यान रखना आवश्यक है। बहुधा देखा गया है कि खिलाड़ी 'शार्ट-पास' को बहुत ही धीमी गति से देने की गलती कर बैठते हैं। धीमी गति वाले पास में विपक्षी खिलाड़ी को हस्तक्षेप करने का मौका मिल जाता है।

खिलाड़ी की आती हुई गेंद की तरफ बढ़ना अति आवश्यक है। 'पास' को सफल सार्थक बनाने के लिए प्राप्तकर्ता जितनी जल्द गेंद प्राप्त करेगा, विपक्षी खिलाड़ी के लिए 'पास' में हस्तक्षेप करना उतना ही कठिन होगा। यदि प्राप्तकर्ता खिलाड़ी गेंद की ओर बढ़ता है तो इससे 'पास' अधिक सुरक्षित तो होता ही है, साथ ही खेल में तेजी आ जाती है।

इन तरीकों से प्रतिपक्ष की रक्षा-व्यवस्था अस्तव्यस्त होने लगती है और उनसे गलतियां भी अधिक होने लगती हैं। वैसे भी रक्षा-व्यवस्था पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव का बहुत महत्व होता है। यदि प्रतिपक्ष की रक्षा पंक्ति बार-बार दूसरी टीम के खेल में बाधा डालती रहे, तो इससे उन (प्रतिपक्ष) का आत्म-विश्वास बहुत बढ़ जाता है। इसलिए यदि हल्का 'पास' दिया गया हो तो प्राप्तकर्ता का गेंद की ओर बढ़ना बहुत आवश्यक है।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि खिलाड़ी अपने पास को यथासम्भव प्रतिपक्ष की दृष्टि से बचाये। खिलाड़ी को 'पास' के पीछे अपने उद्देश्य को गुप्त रखने की तकनीक आना चाहिए। उसे दिखावटी 'पासों' का प्रयोग भी आवश्यक करना चाहिए। दूसरे, सिर तथा आंखों की हरकत बहुत महत्वपूर्ण होती है। खिलाड़ी को उस तरफ बिल्कुल नहीं देखना चाहिए, जिस तरफ वह 'पास' दे रहा हो। अनेक खिलाड़ी तो इस कला में इतने कुशल होते हैं कि 'पास' देकर अपने ही साथियों को चक्कर में डाल देता है। फिर भी, अच्छे टीम-वर्क से यह गड़बड़ दूर की जा सकती है और जब खिलाड़ी एक बार अपने सहयोगियों की विशेषताओं को जान जाता है तब इस प्रकार की गड़बड़ नहीं होती। 'पास' को छिपाने का एक तरीका यह भी है कि खिलाड़ी गेंद लेकर 'पास' की विपरीत दिशा में दौड़ जाए।

गुप्त 'पास' देने के कुछ अन्य उपाय ये हैं—(१) स्टिक तथा शरीर—दोनों से एक साथ झूठ-मूठ दिखावटी हरकत करनी चाहिए। (२) एक उपाय यह है खिलाड़ी अपनी स्टिक को इस प्रकार घुमाए जैसे वह हिट या पुश के द्वारा 'पास' दे रहा हो और फिर सीधे दौड़ते हुए 'पास दे दे। (३) खिलाड़ी छलपूर्ण 'पासों' (हिट, पुश या फ्लिक) का प्रदर्शन करे।

खिलाड़ी को लगभग सभी प्रकार के दिखावटी, छलपूर्ण तरीकों का प्रयोग पूरी तेजी और तत्परता से करना चाहिए। इसके लिए उसे इतना अभ्यास करना चाहिए कि ये खिलाड़ी की स्वाभाविक हरकतें जान पड़ें।

अच्छी और कारगर 'पासिंग' के लिए खिलाड़ियों को सामान्यतः निम्न बातें ध्यान में रख उनका यथासंभव प्रयोग करना चाहिए—

(१) खिलाड़ी अपनी आक्रमण-पद्धति बदलते रहें। रक्षक-पंक्ति को भी खेल के उतार-चढ़ाव के साथ-साथ अपनी स्थिति बदलते रहना चाहिए।

(२) लम्बे, अप्रत्याशित (छलपू[illegible] 'पासों' द्वारा खेल का केन्द्र बदलते रहें।

(३) जब आक्रमणकारी टीम प्रतिर[illegible] खिलाड़ियों के प्रति 'खिलाड़ी के पीछे खिला[illegible] वाली नीति अपना ले, तब उसके खिला[illegible] को लम्बे और सीधे 'पास' देने चाहिएं [illegible] यदि वे प्रतिरक्षक टीम के क्षेत्र में हों [illegible] फैली हुई रक्षा-व्यवस्था के बजाय छोटे 'प[illegible] देकर खेलना चाहिए।

(४) यदि आक्रमणकारी खिलाड़ी का[illegible] देर से दबाव डाल रहे हों, तो प्रतिर[illegible] खिलाड़ियों को लम्बे और तेज 'पासों' द्[illegible] प्रत्याक्रमण करना चाहिए। इससे स्थिति[illegible] परिवर्तन होगा, जो लाभप्रद सिद्ध हो सक[illegible] है।

(५) मैदान में उतरते समय पहले ही खिलाड़ियों को अपनी-अपनी स्थि[illegible] निश्चित कर लेना उपयोगी होगा।

मैदान में खिलाड़ियों की स्थिति

कोई भी खिलाड़ी तभी सफलतापू[illegible] रोचक खेल का प्रदर्शन कर सकता है, [illegible] वह अपने अभ्यास और रुचि के स्थान [illegible] खेल रहा हो। यह महत्वपूर्ण ध्यान देने यो[illegible] बात है कि अपने शारीरिक तथा मानसि[illegible] गठन के अनुरूप ही खिलाड़ी को अपने खे[illegible] की स्थिति अथवा स्थान का चुनाव कर[illegible] चाहिए। जैसे एक भारी-भरकम शरीर व[illegible] खिलाड़ी से मुड़ने और तेज गति से भा[illegible] की आशा करना व्यर्थ है। ऐसे खिलाड़ी [illegible] फारवर्ड-पंक्ति में खेलने देना उचित [illegible] कहा जा सकता। ऐसे खिलाड़ी को 'बैक' [illegible] स्थिति में खिलाना ही अधिक उपयोगी मा[illegible] जायेगा। इसी प्रकार नाटे कद और ह[illegible] शरीर वाले चुस्त और फुर्तीले खिला[illegible] 'हाफ बैक' की स्थिति में ही सफलतापूर्व[illegible] खेल सकते हैं। यदि ऐसे खिलाड़ियों [illegible] ड्रिब्लिंग भी उत्तम हो तो इन्हें इनसाइ[illegible] फारवर्ड की स्थिति में ही सफलतापूर्व[illegible] खेलने देना उपयुक्त होगा। छोटे कद [illegible] खिलाड़ी अपनी शारीरिक रचना के अनुस[illegible] फारवर्ड-पंक्ति में अधिक उपयोगी सिद्ध [illegible] सकते हैं। यह ज्ञातव्य है कि अन्य खिलाड़ि[illegible] की तुलना में बैक खिलाड़ी अपेक्षाकृत लम[illegible] होने चाहिएं, क्योंकि उस अनुकूल स्थिति [illegible] लम्बी पहुंच अधिक कारगर और अनुकू[illegible] सिद्ध हो सकेगी।
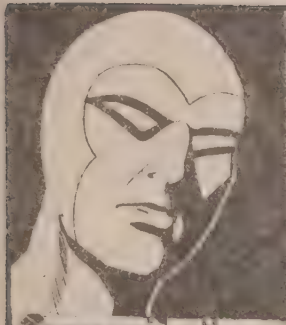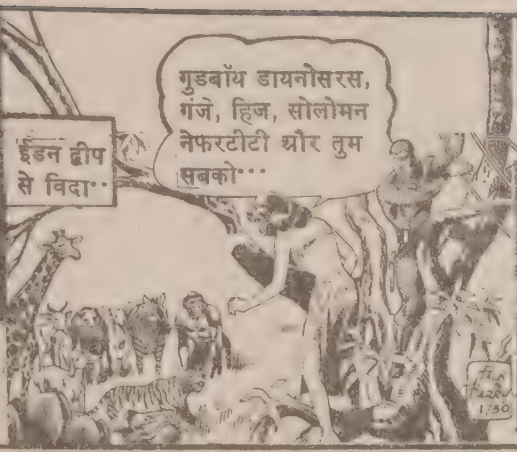
फैण्टम और
हनीमून से वापसी
ईडन द्वीप से विदा··
गुडबॉय डायनोसरस, गंजे, हिज, सोलोमन नेफरटीटी और तुम सबको···
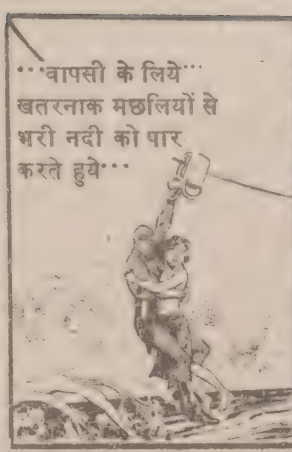
···वापसी के लिये··· खतरनाक मछलियों से भरी नदी को पार करते हुये···

ईडन
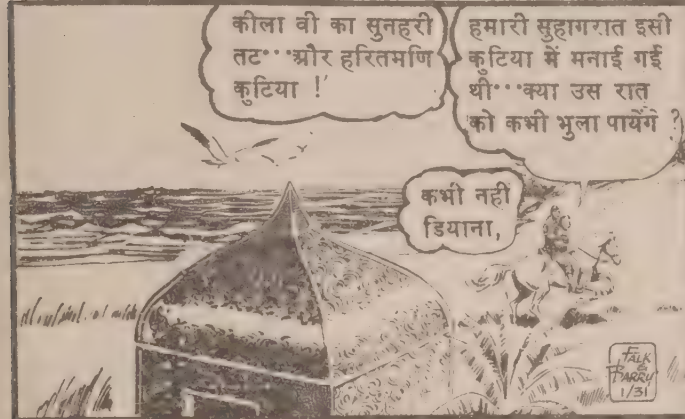
कीला वी का सुनहरी तट···और हरितमणि कुटिया !
हमारी सुहागरात इसी कुटिया में मनाई गई थी···क्या उस रात को कभी भुला पायेंगे ?
कभी नही डियाना,
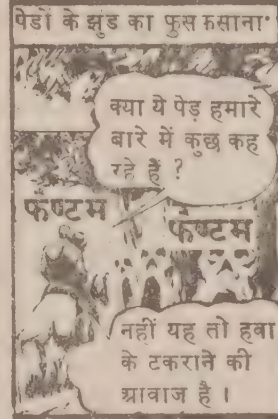
पेडों के झुड का फुसफुसाना
क्या ये पेड़ हमारे बारे में कुछ कह रहे हैं ?
फैण्टम
फैण्टम
नहीं यह तो हवा के टकराने की आवाज है ।
फैण्टम का देश···में अलविदा तो नहीं कह सकती हां, जब तक वापस न आऊं तब तक विदा लेती हूं···
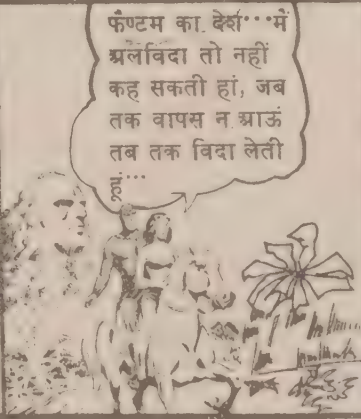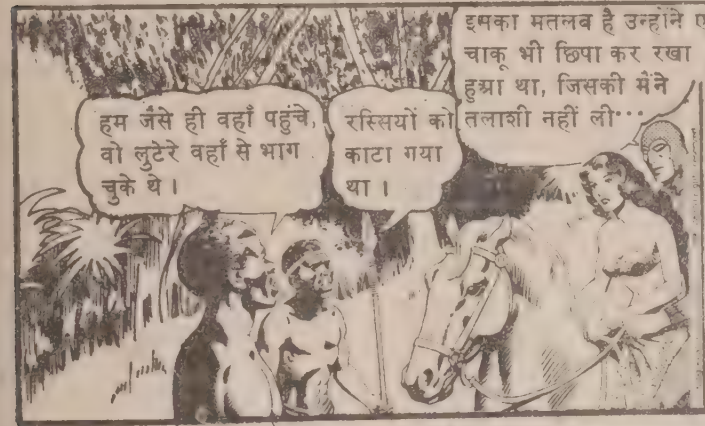
हम जैसे ही वहाँ पहुंचे, वो लुटेरे वहाँ से भाग चुके थे ।
रस्सियों को काटा गया था ।
इसका मतलब है उन्होंने एक चाकू भी छिपा कर रखा हुआ था, जिसकी मैंने तलाशी नहीं ली···

मैं जरा ईडन जाने की जल्दी में था उस समय···

तुम क्या···कोई भी होता जल्दी में ही होता, ओ चलते फिरते भूत ।
वो लोग खतरनाक थे···क्या तुम उनको ढूंढने की कोशिश करोगे ?
हर हालत में ···हम दोनों के पास अब अपने-अपने जरूरी काम हैं···
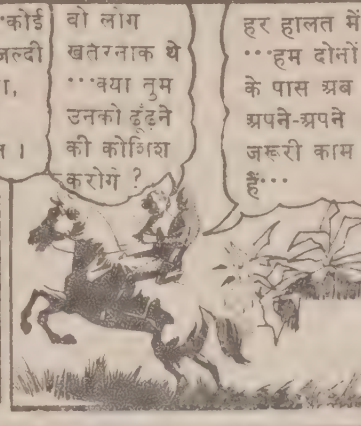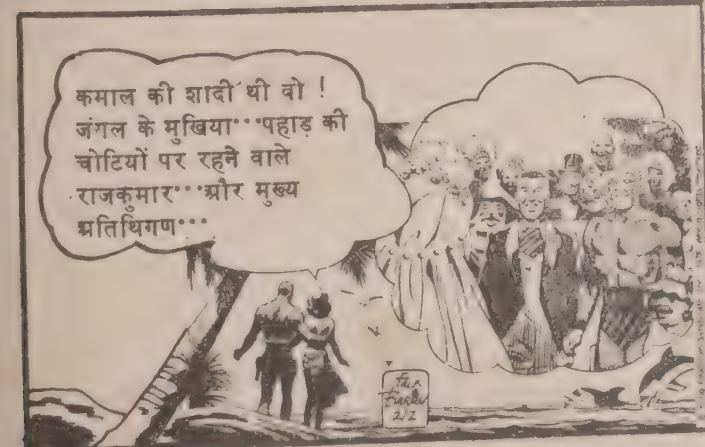
कमाल की शादी थी वो ! जंगल के मुखिया···पहाड़ की चोटियों पर रहने वाले राजकुमार···और मुख्य अतिथिगण···

दोनों कमाल के राष्ट्रपति लुआगा और गोरांडा !
हम तुम दोनों को पति पत्नी का अधिकार देते हैं ।
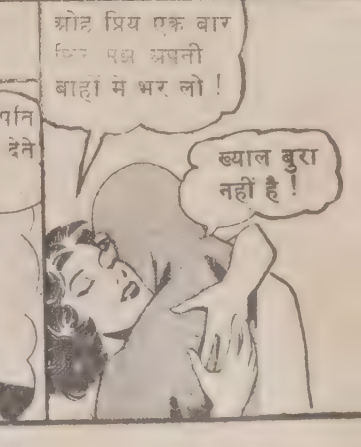
ओह प्रिय एक बार फिर मुझे अपनी बाहों में भर लो !
ख्याल बुरा नहीं है !

बन्दर डाकिया हर रोज मेरी एक चिट्ठी तुम्हें पहुंचा दिया करेगा···

मावीतान हवाई अड्डा।

ऐसा भी समय आता है जब फैण्टम को जंगल छोड़कर शहर आना पड़ता है···

इसका मतलब है बन्दर डाकिया ज्यादा केले खाने की जिद्द करेगा···

···और एक साधारण आदमी के भेष में रहना पड़ता है···

मैं जाना तो नहीं चाहती···तुम मुझे बहुत याद आओगे क्या हम दोनों शीघ्र नहीं मिल सकते ?

अवश्य मिलेंगे।

यह उन दिनों में से एक दिन है···

बॉय···

बॉय जब तक हम दोबारा शीघ्र नहीं मिलते !

अलविदा नहीं··· सिर्फ विदा।

वैसे मैं भूल कर रही हूं इससे दूर जाकर···लेकिन मैंने उन लोगों को भी तो वायदा किया था वापस आने का।

तुम दोनों पति-पत्नी हो···

यह सब कुछ हुआ था या एक सपना था ?

यह सच है ! मेरी शादी हुई है !

शीघ्र···अति शीघ्र

क्रमश :

गुमनाम है कोई प्रतियोगिता

इनाम 10 रु०

आपको यह बताना है कि यह किस किस कलाकार की तस्वीर है और कौन क्या दीवानी बात कह रहा है?

यदि एक से ज्यादा अच्छे हल हुये तो इनाम की राशि विजेताओं में बराबर-बराबर बांट दी जायेगी, अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही इस पते पर भेजें :- गुमनाम है कोई प्रतियोगिता, ८ ब, बहादुर शाह जफर मार्ग नई दिल्ली-2। पहुंचने की अन्तिम तिथि :- ६ दिसम्बर ७८ एक पोस्टकार्ड पर एक हल भेजें।

प्र० : लकड़ी से कोयला कैसे बनता है ?

अनिल कुमार पोद्दार—कलकत्ता

उ० : पृथ्वी के लम्बे इतिहास के भिन्न-भिन्न कालों में पृथ्वी के नीचे कोयला बना। कोयले के बनने के काल को पेनिस्ले वेनियन काल भी कहा जाता है। ये काल २५०,०००,००० वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ तथा लगभग ३५,०००,००० वर्ष तक चला, इसके अतिरिक्त कोयला १,०००,००० वर्ष से १,०००,०००,००० वर्ष पहले भी बना था।

इस काल में कोयला किस कारण और कैसे बना ? कोयले की तह पृथ्वी के नीचे कई मीलों लम्बी तथा दस-दस फुट तक मोटी पाई जाती है। ये कोयले की तह चट्टानों की तहों के बीच दबी होती हैं। कोयला हजारों लाखों वर्ष पूर्व गर्म तथा सीली जलवायु में उगे पेड़ पौधों के जंगलों का अवशेष है।

जल्दी उगने वाले बड़े-बड़े पेड़ों तथा कणहिम बड़े-बड़े दलदल के क्षेत्रों को भर देते थे, समय बीतने के साथ ये पेड़ पौधे इत्यादि भर कर दलदल के पानी में गिर जाते थे तथा वायु के अभाव के कारण ये सड़ कर नष्ट होने से बच गये। जीवाणु क्रिया के कारण लकड़ी का कुछ भाग गैस में बदल कर निकल गया तथा एक काला मिश्रण छोड़ गया, जो अधिकतर कारबन ही था। लगातार लम्बे समय तक वनस्पति के उगने तथा मरने के क्रम से इस की तह कई-कई फुट मोटी हो गई। काला मिश्रण ही कोयले की संधि रेखा बनी। कालांन्तर में ये क्रिया भी पृथ्वी के धंसने के कारण रुक गई तथा इस पर मिट्टी और रेत की परतें चढ़ने लगीं। धीरे-धीरे बढ़ती मिट्टी तथा रेत के दबाव से इस वनस्पति की तह का पानी निकल गया और एक गाढ़ा सा मिश्रण बच गया जो धीरे-धीरे सख्त हो कर कोयले में बदल गया। कई स्थानों पर ये क्रिया बार-बार दुहराई गई जब तक की अवशेषों की ये तह, पानी की सतह तक नहीं पहुंच गई तथा एक और दलदलीय क्षेत्र बन गया और फिर से वनस्पति की तह बनकर धरती के नीचे धंस कर मिट्टी तथा रेत से दब गई। और इस प्रकार कोयले की तहों की तहें बनती चली गईं। एक दूसरे से ये तहें मिट्टी तथा रेत जो कि धीरे-धीरे पत्थर बन चुके थे कि तहों से अलग-अलग किये गये थे।

लकड़ी को कोयले में बदलने में हजारों वर्ष का समय लगता है, परन्तु कोयले के शुरू में लकड़ी होने के प्रमाण आसानी से मिल जाते हैं क्योंकि कभी-कभी कोयले की भीतरी तह में कणहिम के सम्पूर्ण निशान मिल जाते हैं तथा तनों के नमूने भी विद्यमान होते हैं तथा पेड़ों के अवशेषों के ठूठ भी कोयले में मिल जाते हैं। इस लम्बी क्रिया द्वारा प्रकृति द्वारा कोयला बनाया जाता है जिसे जलाने के काम में लाया जाता है।

प्र० : सेलखड़ी क्या है तथा किस काम में लाई जाती है ?

उ० : सेलखड़ी को अधिकतर हम शरीर पर लगाये जाने वाले पाउडर के रूप में जानते हैं परन्तु सेलखड़ी अपने अनोखे गुणों के कारण और भी बहुत से कामों में लाई जाती है।

सेलखड़ी एक खनिज है, मनुष्य द्वारा जाना गया सबसे नरम खनिज। सेलखड़ी को नाखून से आसानी से खुरचा जा सकता है। ये मेगनिशयम की छोटी-छोटी परतों या तहों से बना होता है। ठोसरूप में इसे सोपस्टोन कहते हैं तथा इस अवस्था में ये मटियाला या हरा सा होता है। कभी-कभी इस पर भूरे धब्बे भी होते हैं छूने से नरम और चिकना प्रतीत होता है।

सेलखड़ी की सबसे उत्तम किस्म इटली में मिलती है। इस खनिज के निक्षेप या डिपोजिट इंगलेंड, कैनेडा, जर्मनी तथा रोडेशिया में भी हैं। अमरीका के ऐटलांटिक तट पर सारे संसार से अधिक सेलखड़ी के डिपोजिट हैं।

सेलखड़ी को आसानी से किसी भी शक्ल का बनाया जा सकता है तथा ये ताप रोधक है इसलिए खाना पकाने के बरतन बनाने में भी इसका प्रयोग होता है और इसे पोटस्टोन भी कहते हैं। इससे कपड़े धोने के टब तथा हाथ धोने की हौदी भी बनाई जाती हैं।

अधिक तापमान पर ये सख्त हो जाती है और इस गुण के कारण बड़ी-बड़ी भट्टियों में भी इसे लगाया जाता है। तेजाब का भी सेलखड़ी पर बहुत कम असर होता है और इसलिए इसे प्रयोगशालाओं में तेजाब के टब इत्यादि रखने के काम में लाया जाता है इसमें विद्युत रोधक होने का गुण भी है तथा बिजली के स्विच बोर्ड इत्यादि भी इससे बनाये जाते हैं।

प्राचीनकाल में भी लोग सेलखड़ी को बरतन बनाने के काम में लाते थे। मिस्र के लोगों ने इसका सबसे अधिक प्रयोग ताबीज इत्यादि बनाने में किया। वे इन ताबीजों को चमकदार रंगों से रंग देते थे।

दक्षिणी संसार में पाई जाने वाली सेलखड़ी का तीन चौथाई हिस्सा पेन्ट, चमकने टाइलस, सजावट के सामान, छतों पर लगाने, कागज़ बनाने तथा रबड़ के साथ इस्तेमाल किया जाता है। प्राप्त सेलखड़ी का छोटा सा भाग ही शरीर पर लगाने वाले पाउडर बनाने में आता है।
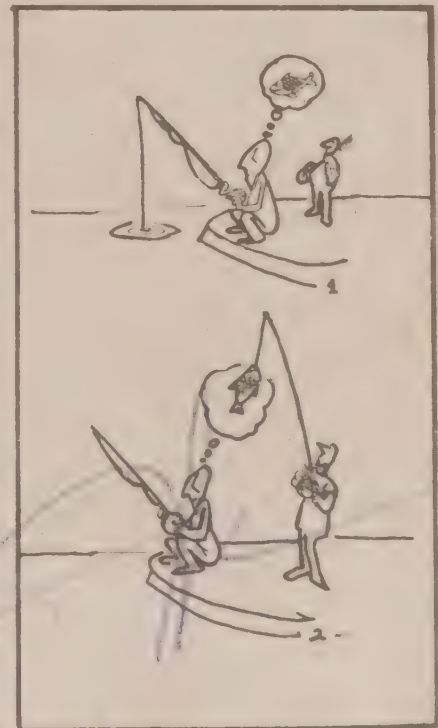
क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

राजनीतिक नेता और दीवानी फिल्म स्टोरियां

आपको पता ही होगा कि मोरारजी देसाई की पुस्तक 'गीता मेरी दृष्टि में' पर आधारित योगेश्वर कृष्ण फिल्म बन रही है। फिल्म में बड़े-बड़े स्टार काम कर रहे हैं। जब मोरारजी फिल्म की स्टोरी लिख सकते हैं तो जनता पार्टी के दूसरे नेता पीछे क्यों रहें ? उनको भी चाहिये कि वे भी फिल्मों की कहानियाँ लिखें। यदि ये लिखने लगें तो कैसी कहानियाँ होंगी उसकी एक कल्पना हमने की है। बम्बई के प्रोड्यूसर चाहें तो मन्त्रियों से सम्पर्क करके कहानियों की बुकिंग करा सकते हैं। बाद में छाती पीट-पीट कर पछताना पड़ेगा।

अडवानी

स्टूडियो नं० ४४

सारांश—हीरो युवा आर्टिस्ट है। टी० वी० पर प्रोग्राम देने के लिए टी० वी० स्टेशन जाता है। वहां टी० वी० प्रोग्राम प्रस्तुत करने वाली आशा चड्ढा से उसकी मुलाकात होती है। प्रोग्राम रिकार्ड करके बाहर आते समय गुंडे आशा के पीछे पड़ जाते हैं। हीरो मार पीट कर गुंडों को भगा देता है। यहीं से उनका प्यार शुरू हो जाता है। वे बुद्धा जयन्ती पार्क में गाने गाते हैं। एक दिन वे स्टूडियो नं० ४४ में प्रोग्राम रिकार्ड कर रहे होते हैं कि बिल्डिंग में आग लग जाती है।

मोहनधारिया

महंगा प्यार

सारांश—हीरोइन का बाप मर चुका है, मां सिलाई कर खर्चा चलाती है। महंगाई की वजह से दोनों का गुजारा मुश्किल से चलता है। वह पढ़ाई छोड़ कर टाइपिंग सीखती है। एक दिन सब्जियों का भाव सुन मां को दिल का दौरा पड़ता है। हीरोइन दवा लेने के लिये भाग रही होती है कि वह हीरो की कार से टकरा जाती है। हीरो का बाप अनाज की जमाखोरी करता है। हीरो उससे माफी मांगता है""आगे की कहानी फिल्म बनने पर देखिये।

जार्ज फर्नांडीस

मल्टीनैशनल रोमांस

सारांश—जर्मनी की सीमेंस कम्पनी की बम्बई शाखा में फ्लयोर नामक जर्मन लड़की काम करती है। हीरो उद्योग मंत्रालय में इन्सपेक्टर है। कम्पनी के इंस्पैक्शन के समय हीरो फ्लयौर से मिलता है। बिजली चले जाने से दोनों लिफ्ट में फंस जाते हैं। दोनों में प्रेम हो जाता है। फ्लयोर हिन्दी सीखना शुरू कर देती है। कम्पनी में मजदूर नेता माइकेल हड़ताल करवा देता है""आदि।

राजनारायण

प्रेमशास्त्र

सारांश—सुरेश व सुषमा कांड पर आधारित कहानी।

नोट—फिल्म व्यस्कों के लिये होगी। श्री जगजीवन राम को खासतौर से कम्पलीमेंटरी टिकट भेजा जायेगा। दृश्यों से भरपूर फिल्म।

चरण सिंह

गांव हमारा शहर तुम्हारा

सारांश—गोबर गैस प्लांट के ओवरसियर की गांव की चंचल बाला से नोकझोंक, होली के अवसर पर दोनों का गाना और फिर प्रेम। दिल्ली में किसान सम्मेलन में भाग लेने आना और साथ ही कोर्ट में शादी करना।

एच. एम. पटेल

ओ मेरे सोना रे-सोना रे सोना

सारांश—हीरो गरीब है! रिजर्व बैंक के सोने की नीलामी देखने जाता है वहां शहर के मशहूर जौहरी झवेरी अपनी लड़की के साथ आये हुये हैं। हीरो की नजर हीरोइन से टकराती है। इसी प्रकार नीलामी के अवसर पर वह कई बार एक-दूसरे को देखते हैं। दोनों के दिल में प्रेम का बीज फूटता है। हीरोइन हीरो को अपने बाप की दुकान पर सेल्ज मैन लगवा देती है। दोनों पार्कों में प्रेम के गीत गाते फिरते हैं—एक दिन दुकान पर लाखों का सोना चोरी हो जाता है""आदि आदि।

देवीलाल

तू मेरा बेटा नहीं

सारांश—हीरो विदेश जाता है ? आते समय एयरपोर्ट पर उसके सूटकेस में घड़ियां मिलती हैं, वह जेल जाता है, वह बेकसूर है, जेल से भागता है। उसी स्मगलर गैंग में शामिल होता है जिसने उसके सूटकेस में घड़ियां रखी थीं। और गैंग को तोड़ देता है, गैंग की मैम्बर रीटा से शादी कर लेता है।

अटल बिहारी वाजपेयी

बोइंग बोइंग

सारांश—हीरो को देश विदेश घूमने का शौक—हवाई जहाज में हीरोईन से मुलाकात फिर मास्को, पीकिंग, न्यूयार्क, लंदन, पेरिस रोम, बेंकाक आदि शहरों में रोमांस मनोरंजन से भरपूर फिल्म।

चंद्रशेखर

प्रेम की रीति निराली

सारांश—हीरो युवा कवि है, सोशलिज्म पर कवितायें लिखता है, कविता नाम की लड़की उसकी कविताओं पर रीझ जाती है। दोनों में मुलाकात और प्रेम का बढ़ना। टोटल-रेवोल्यूशन के महासभा में दोनों का बिछुड़ना, हीरो गम में दाढ़ी बढ़ाता है और गाने गाता है। अंत में नाटकीय ढंग से दोनों का मिलन।

जगजीवनराम

उजाला

बिना मां बाप की हरिजन लडकी उजाला का दिल्ली आना, डिफेंस मिनिस्ट्री में हरिजनों के लिए सुरक्षित नौकरियों में से स्टेनो टाइपिस्ट की नौकरी मिलना, स्वर्ण जाट लड़के से प्रेम। राजनारायण का विलेन बन कर लड़की के अपहरण की कोशिश, मार-पीट, बिछोह और अंत में मिलन।

नानाजी देशमुख

तीन बुड्ढों का किस्सा

सारांश—नवयुवकों की टोली—तीन बुड्ढों के गेंग को अभुतपूर्व दांव पेंच लगा कर छुट्टी करती है। मारपीट और सस्पेंस से भरपूर युवकों युवतियों में कव्वाली का मुकाबला।

नोट—यह फिलम साठ वर्ष से अधिक उम्र वालों के लिए नहीं होगी। कॉस्ट में भी ६० से कम आयु के कलाकार लिये जायेंगे।

सर्कस

आनन्द सागर भवान

आओ! आओ सर्कस देखो, दुनिया वालो देखो सर्कस,
भारत के इस लोक भवन में, एक साल से चलती सर्कस।
डायमन्ड जुबली सप्ताह इसका, कुर्सी का शो फुल है चलता,
इसकी निर्माता है 'जनता', मास्टर जिसका जे० पी० बनता।
शेर कई हैं बिगड़े इसके, मास्टर की है कोई न सुनता।
यूं तो इसमें बड़े हैं जोकर, आवाजें हैं जिनकी कर्कश,
पर राज अभी भी हीरो सबका, करता रहता हर वक्त हरकत।
भारत के इस लोक भवन में, एक साल से चलती सर्कस॥
नये-नये करतब दिखलाते, दुनिया वालों—तुम्हें चौंकाते,
जो दर्शक कोई रोके इनको, उसके लिए कमीशन बैठाते।
जनता बेचारी खुद ही रोती, इसके खेल से होकर बेबस,
अब पछताती देख के सर्कस, बावन्डर और बाढ़ में फंसकर।
भारत के इस लोक भवन में, एक साल से चलती सर्कस॥
यूं तो इसके बहुत हैं खेल, एक-एक से हैं वों बढ़ कर,
पर कुर्सी का किस्सा और कमीशन, खास तौर पर हैं यह करतब।
कोई किसी से छीने कुर्सी, कमीशन कोई बैठाए अक्सर।
ऐसा जाने कब तक होगा, कब तक होगी ऐसी सर्कस॥
भारत के इस लोक भवन में, एक साल से चलती सर्कस॥

प्रोफेसर

मिश्री लाल जायसवाल

प्रोफेसर सत्यवान
उनका पड़ोसी था
एक पहलवान,
एक दिन उसने
प्रोफेसर साहब को
कर दिया लहू लहान।
प्रोफेसर साहब ने
अपनी पत्नी को बताया—
पता नहीं क्यों
पहलवान की गुस्सा जागी थी,
मैंने तो उससे
केवल कुछ देर के लिए
उसकी इस्त्री मांगी थी।

तोताराम

तोता राम
जोरू के हैं पूरे गुलाम।
बीबी के इशारे पर
उठते हैं बैठते हैं
पीते हैं खाते हैं
मगर जब वे बस स्टेंड जाते हैं
बड़ा संतोष पाते हैं
बीबी को बस में, बैठा कर
कहते हैं दस में—
मेरी बीबी है बस में!

एक : गंजे को नाखून

—रमेशचन्द्र जोशी

मुहावरे की बातें और है
कि प्रभु! आप
गंजे को नाखून नहीं देते।
मगर मुझे गंजा बनाकर
दूसरों को नाखून देते समय तो
कुछ सोच लेते!

दो : टांग फंसाना

हे भगवान!
क्या करूं, कहां जाऊं?
पत्रिकाएं पचास
और टांगें दो
किस-किस में फंसाऊं?

पृष्ठ १२ से आगे
तोड़ रही थी।

'किसी लेखक से शादी करके। मतलब यह कि जिस प्रकार डाक्टर की पत्नी डाक्टरनी, और वकील की पत्नी वकीलाइन कहलाती है, उसी तरह लेखक की पत्नी बनकर तुम लेखिका कहला सकती हो।'

'चलिए, बन्द भी कीजिए अपना मजाक।'

'क्यों, नाराज हो गई क्या ?'

'नहीं, गंभीरता से ही कह रही हूँ। मेरी कहानी के गुण-दोष बताने की मेहरबानी कीजिएगा ?'

'हां, हां, क्यों नहीं। रुको, मैं गुण-दोष बताता हूं।'

'देखिए, आप व्यंग कर रहे हैं।'

'नहीं जी, बिल्कुल सीरियसली यानि गंभीरतापूर्वक बता रहा हूं, सुनो! लेखक या लेखिका बनने के लिए बड़ी कल्पना-शक्ति होनी चाहिए पास में।'

'ठीक है, मैं भी मानती हूं।

'मानती तो हो, लेकिन कल्पना शक्ति का ही तो अभाव है तुम में।'

'क्या कह रहे हैं आप, मुझमें कल्पना शक्ति का अभाव है ?' उसने बड़े आश्चर्य से पूछा।

ठीक ही कह रहा हूं मैं।' मैंने जोर देकर कहा।

'लेकिन मेरी बुआ तो कहती है...'

'तुम्हारी बुआ के बारे में मेरी जो राय है, क्या उसे दुहराने की जरूरत है ?'

'जी नहीं, मेहरबानी कीजिए। मुझे आपकी राय बखूबी मालूम है।'

'ठीक है, मित्र के नाते एक बात कहूं ?'

'कहिए।'

'तुम लेखिका बनने का ख्वाब छोड़ ही दो। सिलाई, बुनाई, कटाई, सेवई बनाने और शादी ब्याह में गीत गाने जैसे शौक तुम अपना लो, तो ज्यादा अच्छा हो। ये शौक स्त्रियों की स्वाभाविक प्रतिभा के अनुकूल होते हैं।'

आपकी इस बेशकीमती राय का शुक्रिया।' व्यंगपूर्वक उसने कहा। फिर उठ कर चलने लगी।

'अरे सुनो तो ! नाराज हो गयीं क्या ?' मैंने मनाने के स्वर में कहा।

'नहीं-नहीं, नाराज भला क्यों होने लगी ? आप जैसे स्पष्टवादी व्यक्ति तो सभी को प्रिय होते हैं। वह चिढ़कर बोली।

'हाँ, कुछ लोगों को तो बहुत ही पसन्द है मेरा स्पष्ट भाषण,' मैंने कहा, 'और इसीलिए बचपन से ही आदत पड़ गई है मुझे सच कहने की। अच्छा खैर, माफ कर दो मुझे।'

'ठीक है, कर दिया माफ।' वह मुस्करा कर बैठती हुई बोली—'कई बार अपने ही ऊपर झल्लाहट होती है मुझे कि मैं क्यों नाराज नहीं हो पाती आपसे।'

इसके बाद तीन दिन बीत गए—
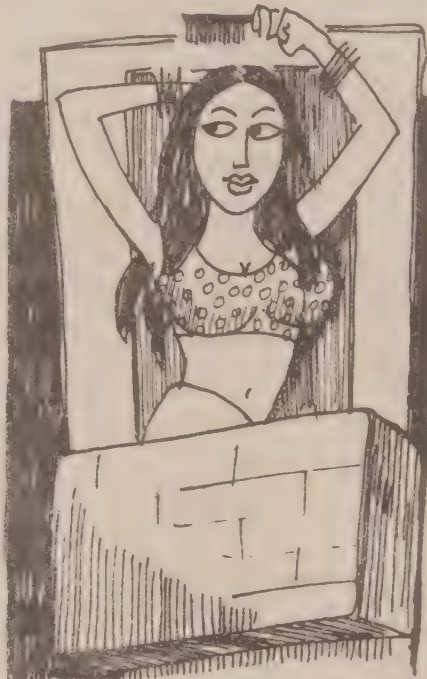
चौथे दिन सुबह मैं रोज की तरह गैलरी में खड़ा, पोस्टमैन की प्रतीक्षा कर रहा था। सामने की गैलरी में मीना भी खड़ी थी, अपने स्वभाविक पोज में, गैलरी की मुंडेर पर कुहनी टेक कर, हथेलियों के पृष्ठ भाग पर ठुड्ढी रखे। इसी पोज में खड़ी होने की आदत थी उसे।

एकाएक उसके बाएं हाथ पर मेरी नजर पड़ी। नीली चूड़ियां बदली जा चुकी थीं। आज उसके हाथ में सुनहरी चूड़ियां थीं। हर दो-चार दिन पर चूड़िया बदल लेने की उसकी आदत थी भी अजीब। मेरा कुतूहल जाग उठा। मेरे अन्दर का लेखक सजग हो गया। मैंने बहुत सोचा-विचारा कि हर दो-चार दिन के बाद वह चूड़ियां क्यों बदल लेती है, पर इस सम्बन्ध में कोई अनुमान लगाने में मेरी कल्पना-शक्ति सफल न हो सकी।

उस दिन दो पत्र आए मीना के ना[म] उनमें से एक वैसा ही नीला लिफाफा [था] जैसा कि अक्सर आया करता था।

मैंने सोचा, कुछ-न-कुछ राज जरूर [है] इस तरह चूड़ियां बदलने के पीछे। उस दि[न] शाम को जब वह किताब लौटाने आई, मैंने पूछा भी इस सम्बन्ध में उससे, ले[किन] कोई जवाब न देकर बात टाल दी उसने [और] मैं मौन रह गया।

दूसरी किताब पढ़ने के लिए ले[कर] मीना जब चली गयी तो मैं उलझ ग[या] अजीब-अजीब ख्यालों में। कहीं मीना कि[सी] से प्रेम तो नहीं करने लगी थी ? और ज्यों ज्यों मैं सोचता गया, मेरी आशंका दृढ़ हो[ती] गई।

फिर कई दिन बीत गए। अब और [भी] गौर से देखने लगा मैं उसकी चूड़ियां।

एक दिन फिर उसकी चूड़ियां बद[ल] गई। सुनहरी चूड़ियों की जगह इस बा[र] हरी चूड़ियों ने ले ली।

मेरा माथा ठनका। अब चुप्पी साध[ना] असंभव हो गया मेरे लिए। मैंने उसे बुलाया। जरा देर बाद वह आई। मैंने कहा—'ए[क] बात पूंछू, मीना ?'

'पूछिए।'

'आजकल पहले की तरह आतीं क्यों नहीं तुम ? और भूली-भटकी कभी आ भी जाती हो, तो पहले की तरह दिल खोलकर बातें क्यों नहीं करतीं ? खुलकर हंसती क्यों नहीं ?'

'तो यह एक बात हुई आपकी !' मीना के स्वर में व्यंग था।

'देखो मीना, बात उड़ाओ नहीं। आज मैं यह भी जानकर ही रहूंगा कि तुम इस तरह दो-दो, चार चार रोज बाद चूड़ियां क्यों बदल लेती हो ?'

जरा शरमा कर वह बोली, यह मेरा व्यक्तिगत मामला है।'

मेरी उत्सुकता सीमा पार कर रही थी। मैंने कहा—'क्या मेरे जानने लायक नहीं है इसका कारण ? तुम तो मुझे अपना मित्र मानती थीं न ?'

हाँ, और अब भी मानती हूं,' वह बोली, 'पर...अच्छा ठहरिए, मैं बताती हूं। लेकिन नहीं, मुझे बहुत शर्म आती है। आप मुझ पर हँसेंगे, मेरा मजाक उड़ाएंगे।'

शेष पृष्ठ ३६ पर

बन्द करो बकवास

हम तुम्हारे ही थे, हम तुम्हारे ही रहेंगे।

बन्द करो बकवास, चिकमगलूर की जीत के बाद सभी यही कहते हैं।

न तुम हमें जानों न हम तुम्हें जानें मगर लगता है कुछ ऐसा—

बन्द करो बकवास, माना कि तुम्हें गाने का बहुत शौक है, मगर वोट मांगने का कोई और तरीका अपनाना पड़ेगा।

अरे दीवानों मुझे पहचानो, कहां से आया, मैं हूं कौन ?

बन्द करो बकवास, तुम्हारा तो यह रोज का धन्धा बन गया है। शराब पीकर आते हो और हमें घर पहुंचाने को कहते हो।

'नहीं हंसूंगा मीना, और मजाक भी नहीं उड़ाऊंगा।' मैंने आग्रहपूर्वक कहा, 'पर भगवान के लिए सब सच-सच बतादो मुझे।'

'अच्छा।' मीना ने अपनी गर्दन झुका ली और कहा--'जिस दिन मेरे जीवन में कोई महत्वपूर्ण घटना घटती है, उस दिन, उस सुखद घटना की याद में मैं चूड़ियां बदल लेती हूं, ताकि हाथ की चूड़ियों पर दृष्टि पड़ते ही उस विशेष घटना की याद आ जाए मुझे।'

'अच्छा तो यह बताओ कि जिस दिन लाल चूड़ियां बदल कर तुमने नीली चूड़ियां पहनी थीं, उस दिन क्या हुआ था?'

'उस दिन एक सुन्दर नवयुवक से मेरी जान-पहचान हुई थी।'

'क्या नाम है, उस भाग्यशाली का?'

'सुनील।'

'जान-पहचान कैसे हुई उससे तुम्हारी?'

जी० पी० ओ० के पास मेरी साइकिल, उसकी साइकिल से टकरा गई थी।'

'अरे वाह, बिल्कुल कहानी में बैठने लायक घटना है यह तो। अच्छा फिर क्या हुआ?'

'होगा क्या, वह बहुत अच्छा लगा मुझे, और उस दिन के बाद से रोज मुलाकात होने लगी हमारी।'

'अच्छा!' आश्चर्य से कह पड़ा मैं। तो, सचमुच ही मीना प्रेम के चक्कर में पड़ गई थी। मेरा अन्दाज गलत नहीं था। आखिर एक लेखक का अन्दाज ठहरा, गलत हो कैसे सकता था।

'क्या उसी के पत्र आते हैं तुम्हारे पास, उन नीले लिफाफों में?' मैंने पूछा।

'हां। क्यों? जलन होती है आपको?'

'नहीं। जलन औरतों को हुआ करती हैं, मर्दों को नहीं।' झूठमूठ ही अकड़कर कहा मैंने, 'हम पुरुष बहुत ऊंचे विचारों के होते हैं। पर क्यों जी, जिस दिन नीली चूड़ियां बदल कर सुनहरी चूड़ियां पहनी थीं तुमने, उस दिन क्या हुआ था?'

'उस दिन पहली बार हम दोनों एक साथ सिनेमा देखने गए थे।'

'सिनेमा जाने में ऐसी क्या नई बात थी भला?'

'सिनेमा जाना कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है, पर उस दिन उसने पहले-पहल मेरा हाथ अपने हाथ में लिया था।'

'अच्छा, तो यहाँ तक हिम्मत बढ़ गई है बेटे की?' मैंने मन-ही-मन कहा। फिर मीना से बोला—'बहुत खूब।'

'बहुत खूब क्या?' वह बोली, 'मैं तो मर गई थी शरम के मारे।'

'अच्छा, तो काफी ढीठ है वह। युवकों को ऐसा ही ढीठ होना भी चाहिए।'

'अरे, यह ढिठाई तो कुछ भी नहीं, 'मीना सिर झुकाकर बोली। उसके गाल लाज से गुलाबी हो उठे।

'हूँ! तो क्या उससे भी आगे बढ़ गया वह?' मैंने कहा और मन-ही-मन एक भद्दी-सी गाली दी उसे।

'लेकिन और मैं नहीं बता सकती। मुझे बहुत शर्म आती है। पर जिस दिन यह घटना घटी उस दिन मुझे...'

'सुनहरी चूड़ियां पहननी पड़ीं। ठीक है न?' मैंने उसके वाक्य की पूर्ति करके कहा।'

'तो मेरी चूड़ियों पर काफी तेज नजर रहती है आपकी?' वह बोली।

'चूड़ियों में दिलचस्पी की बात को गोली मारो। एक लेखक होने के नाते मैं इस मनोरंजक घटनाक्रम का निर्विकार भाव से अध्ययन कर रहा हूं।'

'तब तो आगे की साधारण-सी बात भी आपको बता देना ठीक ही होगा। कल...कल शाम को उसने मेरा आलिंगन किया था।'

'क्या...आलिंगन किया था?' मेरे होंठ सूख गए। जीभ से उनको तर करते हुए मैं चिल्ला पड़ा, 'यह असंभव है, सर्वथा असंभव?'

'ठीक है, आपको ऐसा सोचने का पूरा अधिकार है, 'कहकर मीना चली गई। उसके जाने के बाद काफी देर तक मैं सोचता रहा—कैसी निर्लज्ज लड़की है यह? बिना सोचे-समझे एक गैर युवक को अपना आलिंगन करने देती है, और फिर ऐसी बात कितनी निर्लज्जता से एक तीसरे व्यक्ति को बताती है।

मैंने निश्चय किया कि ऐसी बेशर्म युवती से मैं अब आगे दोस्ती नहीं रख सकता।

उसके बाद आठ-दस दिन तक मीना मेरे कमरे में नहीं आई। हां, सुबह के वक्त जरूर हम दोनों गैलरी में खड़े होकर पहले की तरह ही पोस्टमैन की राह देखा करते, और उस समय मेरी निगाह बराबर मीना के बायें हाथ पर टिकी रहती। रोज मैं धड़कते दिल से मीना के बाएं हाथ पर नजर डालता कि उसकी वे हरी चूड़ियां बद[illegible] गई हों कहीं। वह बदमाश कहीं प्रणय-सो[illegible] पर एक सीढ़ी और ऊपर न चढ़ आया[illegible]

तभी मैंने एक दिन देखा कि मीन[illegible] बाएं हाथ की चूड़ियां सचमुच बदल गई[illegible] उस दिन उसके हाथ में हरी की जगह [illegible] चूड़ियां दिखाई दीं मुझे। मैं छटपटा [illegible] जानने के लिए, कि अब क्या नया गुल [illegible] है। लेकिन जानने का कोई उपाय न [illegible] मीना मेरे कमरे में आना अब बिल्कु[illegible] छोड़ चुकी थी।

दिन भर किसी काम में मेरा मन [illegible] लगा। मन उलझा-उलझा सा रहा। रात [illegible] नींद भी नहीं आई ठीक से।

दूसरे दिन रोज की अपेक्षा जल्दी ही [illegible] गैलरी पर खड़ा हो गया। मीना काफी [illegible] बाद, यानि रोज के वक्त पर ही आ[illegible] गैलरी में खड़ी हुई। मैं और सब्र न [illegible] सका, वहीं से चिल्लाकर पूछा—'अब [illegible] हुआ है?'

मीना ने भी अपनी गैलरी पर खड़े-[illegible] ही उत्तर दिया—'कुछ विशेष नहीं, उ[illegible] शादी का प्रस्ताव रखा है।'

मैं और भी बेचैन हो उठा, यह ज[illegible] के लिए कि मीना ने क्या जवाब दिया है [illegible] के इस प्रस्ताव का। लेकिन यह बात गै[illegible] पर से चिल्लाकर नहीं पूछी जा सकती [illegible] आखिर लोक-लाज का भी तो थोड़ा [illegible] रखना जरूरी था।

अगले दिन जब मीना अपनी गैल[illegible] आकर खड़ी हुई तो और भी आश्चर्यज[illegible] दृश्य सामने आया। आज उसके दोनों [illegible] खाली थे। एक भी चूड़ी नहीं पहने थी व[illegible]

मैं सोचने लगा—आखिर एकाएक [illegible] क्या हुआ कि मीना को अपनी सब चू[illegible] उतार देनी पड़ीं। कहीं उसके प्रेमी का [illegible] अनिष्ट तो नहीं हो गया!

बहुत सोचने पर भी कुछ समझ में [illegible] आया। कल्पनाशक्ति ने जवाब दे दिय[illegible] आखिरकार मुझे हाथ जोड़कर मीना से अ[illegible] रोध करना पड़ा कि वह पांच मिनट के [illegible] मेरे कमरे में आने की कृपा करें।

थोड़ी देर बाद मीना आई।

उसने जो कुछ बताया, उससे और [illegible] घोर आश्चर्य में डूब गया मैं। मीन[illegible] बताया कि अपने प्रेम-प्रकरण के सम्बन्ध[illegible] जो कुछ उसने मुझे बताया था, उसका ए[illegible]

शेष पृष्ठ ४०

मदहोश
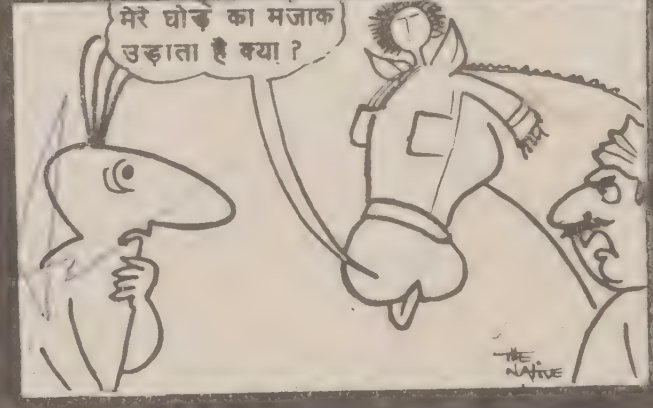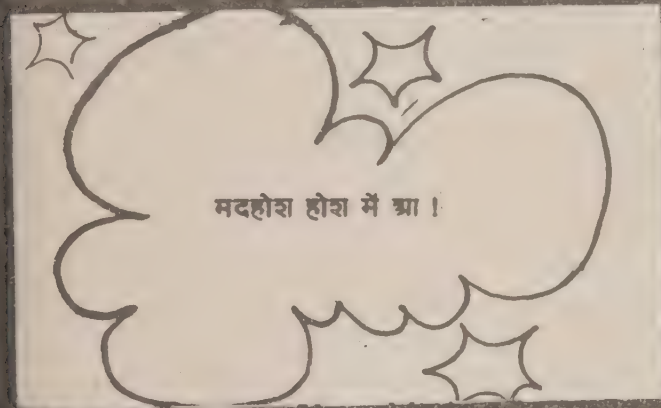
परिणाम

अंक न० ३६ और ३७ में प्रकाशित प्रतियोगिताओं के परिणाम

अंक ३६. वर्ग पहेली का हल

आ	नं	द	मा	र्गी
स	ब	■	यू	■
■	र	हा	स	हा
दी	दा	र	■	रु
खा	र	■	चू	न

किसी भी प्रेषक का सही हल प्राप्त नहीं हुआ इसलिए विजेता कोई नहीं।

शेर/कविता प्रतियोगिता का हल

दीवाली की ये रात है काली
मगर हमारी जेब है खाली
आने वाली है मेरी साली
कोई खोल दे तिजोरी की ताली॥

विजेता :- नवीन कुमार
रजिन्द्र नगर नई दिल्ली

अंक ३७. नारा प्रतियोगिता

विजेता:- कु० आशा तिवारी
- आगरा

नारा :- मुझे पागल कुत्ता इसलिए पसन्द है क्योंकि उसने आपको काट रखा है।

● मालिक—(नौकर से) मोहन, बंसी तो एक साथ दो बक्स ले जा रहा है, तुम एक ही ले जाओगे ?

मोहन—हजूर, बंसी तो कामचोर है। वह दुबारा नहीं आना चाहता।

● मोहन अपने मित्र के साथ बैठा चाय पी रहा था। उसने अपने नौकर को आवाज दी—जगपति, कुछ चीनी ले आओ।

जगपति बोला—चीनी तो चीन में रहते हैं, मैं कैसे लाऊं ?
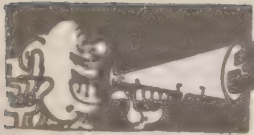
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : जब सब कुछ करने वाला भगवान है तो उसने हमें क्यों पैदा किया है ?

उ० : सारी गलतियां हमारे सर मंडने के लिये ।

इस्लाम उल्ला खां—सुरेश ग्रोवर : एक दोस्त का दूसरे दोस्त से क्या रिश्ता होना चाहिए ?

उ० : हमने तो एक ही रिश्ते को महत्वपूर्ण देखा है कि दोस्त का हाथ हमारे सर पर रहे और हमारा हाथ दोस्त की जेब में ! आ···हा··हा···! कहिये कैसी रही ?

नरिन्द्र निन्बी, 'बट्टू'—कपूरथला : आपके पैदा होने पर सबसे अधिक खुशी किसे हुई ?

उ० : खुशी तो पता नहीं किसी को हुई भी थी या नहीं । हमें तो इतना पता है कि सबसे अधिक हम रोये थे ।
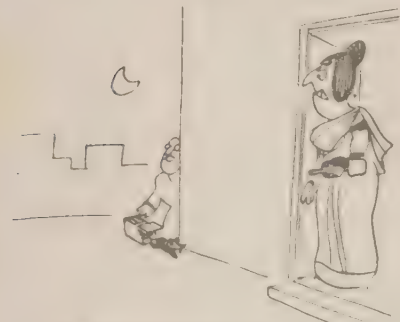
चन्द्रभान "अनाड़ी"—जबलपुर : चाचा जी, कलयुग के फरिश्तों की क्या पहचान है ?

उ० : वह इन्सानियत के रिश्ते निभाते हैं ।

डा० अजय शाही—अमृतसर : अमृतसर का दीवाना हूं, कोई हमराज नहीं मिलती, ताजमहल बनवाना चाहता हूं मुमताज नहीं मिलती ।

उ० : मिल तो जाये, पर उसे पता है, आप झूठ बोल रहे हैं । जब बनवाने का समय आएगा तो आप एक प्याऊ भी नहीं बनवा पायेंगे ।

एजाज अख्तर—भवानीपुर : चाचा जी अंक ३३ में अपना फोटो छपा देख कर बहुत खुशी हुई । साथ ही दुःख इस बात का हुआ कि मेरा नाम गलत छपा था ।

उ० : इसे हमारी दीवानगी समझ लीजिये । और हमारी फोटो के नीचे कोई गलत नाम लिख कर हम से बदला ले लीजिये ।

दिनेश मटाई "राजा"—इन्दौर : चाचा जी, मनुष्य की महानता कहाँ छुपी होती है ?

उ० : कब्रिस्तान में या "डाईलैसिस" में । क्यों वहाँ जाने से पहले कोई महान नहीं समझा जाता ।

चंद्र शेखर गोस्वामी—हरिद्वार : डीयर अंकल, मैंने एक छोटी सी हास्य कथा लिखी है, क्या आप उसे दीवाना में प्रकाशित करेंगे ?

उ० : अगर उसे पढ़कर रोना न आया तो अवश्य प्रकाशित करेंगे ।

राकेश कुमार बत्तरा—करनाल : यदि दो दीवाने एक जगह मिल जायें तो क्या होगा ?

उ० : मौज ही मौज होगी साहब । पांचों घी में होंगी, सर कढ़ाई में और गम चूल्हे में । इसके लिये एक शायर ने कहा है :

यह ना समझो, शमा इक और परवाने दो,
खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो ।

अशोक जोहर "गगन"—देहरादून : चाचा जी, आप ऐसे ही बातूनी हैं तो जनता पार्टी में क्यों नहीं शामिल हो जाते । वहां सब आप जैसे ही भरे पड़े हैं ।

उ० : यह आपका भ्रम है । हम सा वहां एक भी होता तो जनता पार्टी की लुटिया तो डूबती नहीं, या डूबने में अधिक देर नहीं लगती ।

सज्जन कुमार मोर—दिमापुर : घर की मुर्गी दाल बराबर तो घर का मुर्गा ?

उ० : यानि आप यह पूछना चाहते हैं कि हमारे घर में हमारी क्या हालत है ।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : किसके दर्शन करके आप खिल उठते हैं ?

उ० : अपनी श्रीमती जी के, यह लिखने पर हमें विश्वास है कि शाम के भोजन में हम एक रोटी मांगगे तो हमें दो मिलेंगी और वह भी घी से चुपड़ी हुई । और हमें पता है, हमने जीनत अमान या परवीन बाबी का नाम लिया तो वहां से मूंगफली का एक छिलका मिलने की उम्मीद भी नहीं ।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला : चाचा जी, इन्सान भगवान से हमेशा पैसा ही क्यों मांगता है ?

उ० क्योंकि यह दुनिया गाय के सींग पर नहीं पैसे की नोक पर खड़ी है । पैसे के बगैर अगर भगवान भी इस दुनिया में आ जाये तो अपना पेट पालने के लिये वह आपको पटरी पर बैठा दीवाना बेचता नजर आयेगा ।

अरुणा डेविट, "केवल"—कपूरथला : इन्दिरा गांधी आ रही है क्या इसी डर से अब आपका दीवाना भी समय पर आने लगा है ?

उ० : इन्दिरा गांधी क्या आ रही है, एक आंधी आ रही है । दीवाना को आप तक समय पर पहुंचाने के लिये हमें सबसे बड़ा डर पाठकों का है ।

प्रीतम सिंह—रेवाड़ी : दीवाना में सबसे बड़ा कमाल क्या है ?

उ० : सब कमाल ही कमाल है । हम तो बस इतना कहेंगे ।

दीवाना है दीवाना, दीवाने को क्या कहिये,
जिस पर शमा मरती उस परवाने को क्या कहिये ।

रोशन त्यागी—इंदौर : चाचा जी, पता नहीं क्या बात है सपने में मुझे हेमा मालिनी क्यों दिखाई देती है ?

उ० : गलती से आपके सपने में चली जाती होगी । उसे हमारे सपने में भेज दीजिये । आपकी चाची को हम आपके सपने में भेज देंगे ।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

आज जो बड़े नेता मुग़लेआज़म बन कर ऊंची कुर्सियों पर बैठे हैं उन के सामने सवाल यह नहीं है कि पुलिस ने कहां गोली चलाई और कितने मरे ?
(दीप जलाइये)
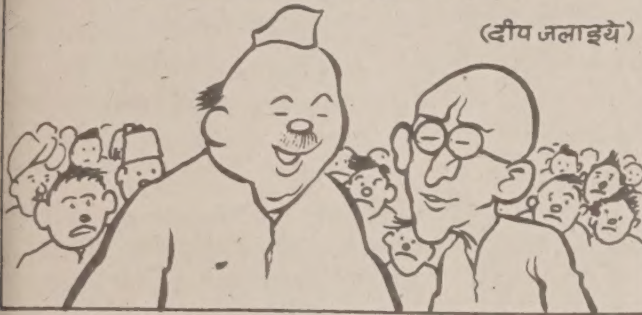
सवाल यह नहीं है कि तुग़लकआबाद को गिरा कर क़ब्रिस्तान बना दिया गया. बुल्डोज़र तो नहीं चलाया!
(मिठाई बांटिये)
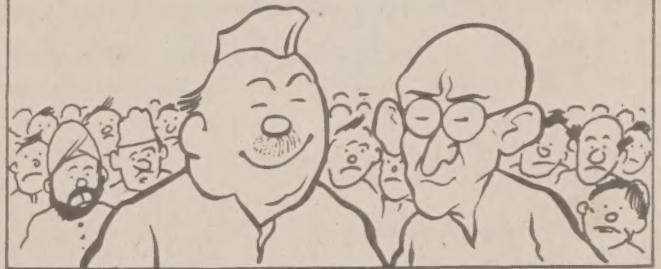
सवाल यह नहीं है कि नसबन्दी पर विश्व बैंक क्या कहेगा ? (सच्ची बात कहने पर रेडियो और टी॰ वी॰ की ज़ुबान बन्द तो कर दी है!)
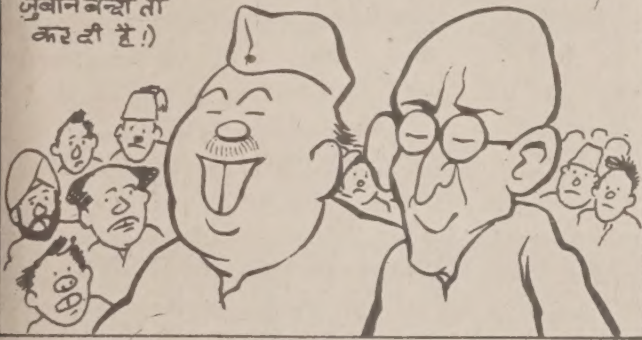
सवाल यह नहीं है कि कितने बिल्ला और रंगा रंगेहाथों नहीं पकड़े जा रहे हैं ?
(तालियां बजाईये)
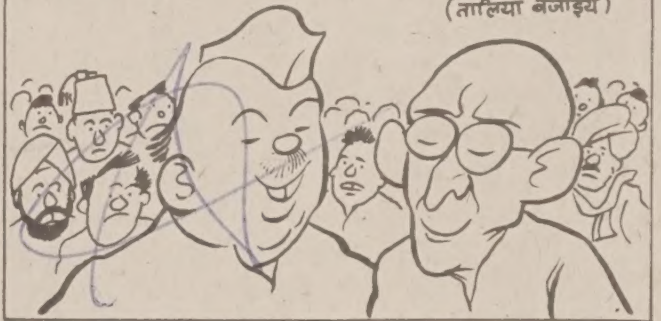
सवाल यह नहीं है। कि कितने बूढ़े कंधों पर कितने जवान देश का भार है ?

सब से बड़ा सवाल यह है?
वह फिर आ गई!
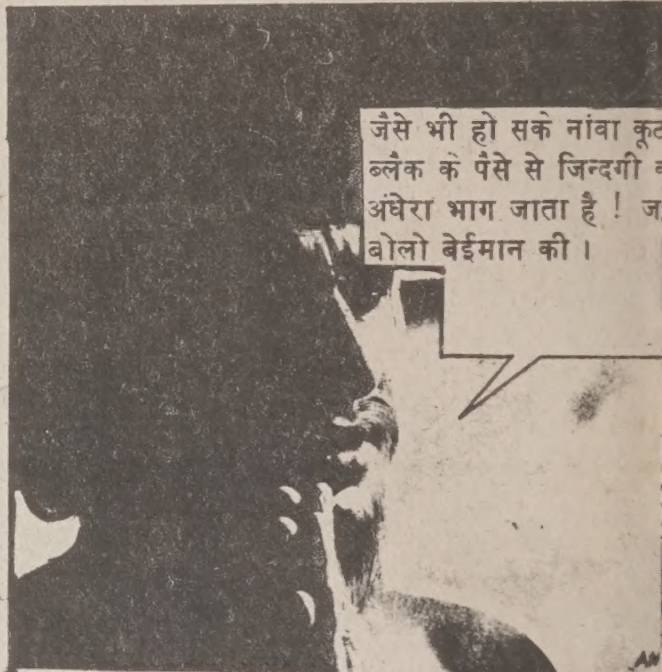
पृष्ठ ३६ से आगे

एक शब्द झूठ था, और यह भी कि वह युवक सिर्फ उसकी कल्पना की उपज थी ।

हंसते हुए वह बोली—'आपने कहा था न कि मुझमें कल्पनाशक्ति का एकदम अभाव है, इसलिए मैंने अपनी कल्पनाशक्ति की थोड़ी-सी झलक दिखा दी है आपको । कहिए, कैसी रही ?'

वाह, बहुत अच्छी रही उसकी कल्पना-शक्ति की भी ।

सच पूछिए तो, अब भी मुझे ऐरों-गैरों पर कहानियां लिखना कतई पसन्द नहीं । मीना को मैं जब तक एक साधारण लड़की समझता था, तब तक उस पर भी कहानी लिखना मुझे स्वीकार न था, लेकिन अपनी गजब की कल्पनाशक्ति दिखाकर उसने यह साबित कर दिया है कि वह साधारण से भिन्न है । इसीलिए मुझे कहानी लिखनी पड़ रही है ।

वास्तव में जिस वक्त उसने हंसते हुए रहस्योद्घाटन किया, उसी वक्त कागज-कलम लेकर मैं लिखने बैठ गया, और सबसे पहले मैंने अपनी कहानी का शीर्षक लिख डाला—'बदलती चूड़ियां ।' ●

ओमप्रकाश मूथा, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर, मेरक सर्कल, उदयपुर, २२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, और पढ़ना-लिखना।

बीरभान अरोड़ा, मोहल्ला इन्द्रापुरी, नवांशहर, १५ वर्ष, रेडियो सुनना, चुटकले, शेयर सुनना, दूसरों के साथ घूमना और दोस्ती करना।

सतीश गुप्त 'रीतू' ८४२, गुलचमन गली लुधियाना (पंजाब), २३ वर्ष, पत्र-मित्रता रोमांस करना और पढ़ना।

सुधीर श्रीवास्तव, बांके साह चौक (चन्दवारा) मुजफ्फरपुर (बिहार), १६ वर्ष, सिनेमा देखना, शायरी करना, सैर करना।

हरीश बेरा, मकान नम्बर १२० नई आबादी, रिवाड़ी, १८ वर्ष, फर्माइश भेजना, क्रिकेट खेलना, दोस्ती करना, पुस्तकें पढ़ना।

राजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव उर्फ बिक्की, वार्ड नम्बर ३ के पास, अम्बिकापुर (मध्य प्रदेश), १८ वर्ष, लोगों का दिल जीतना।

अखिलेश मनचन्दा, मनचन्दा क्लीनिक, दुर्गापुरी, लोनी रोड, शाहदरा, १० वर्ष, चित्रकला करना, बड़ों का आदर करना।

रमेश बतरा, ई० १८४ इवन स्टोरी क्वाटर, ईदगाह रोड, दिल्ली, १६ वर्ष, मुंह से बाजा बजाना, गाना गाना, साईकिल चलाना।

अरीहन्त जैन, द्वारा डाक्टर पवन जैन बरनाला, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पिक्चर देखना, फोटोग्राफी करना, अच्छा काम करना।

सुरेन्द्र प्रताप द्वारा राघवेन्द्र प्रताप एडवोकेट, २१४, राधा कुण्ड गोण्डा, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फोटो बनाना, पढ़ना, सच बोलना।

देवेन्द्र कुमार मकलेचा, ४५ स्टेशन रोड, मेघनगर, १८ वर्ष, फिल्म देखना, चित्रकारी करना, संगीत सीखना और गाने गाना।

अशोक कुमार गर्ग 'गुड्ड' ६८ लक्ष्मीबाई कालोनी, ग्वालियर १७ वर्ष, पेन्टिंग करना, चित्र बनाना, नये दोस्त बनाकर दोस्ती करना।

अविनाश कुमार सिंह, ए० १८, आई० एन० ए० कालोनी नई दिल्ली, १५ वर्ष, मेकेनिक बनना, गाना सुनना, मित्रता करना।

रजनीश कुमार पुरी पुत्र श्री रामकिशन पुरी, गांव व पोस्ट नूरपुर बेदी, जिला रोपड़ रूप नगर, १६ वर्ष, फिल्म देखना।

अमर नाथ सिंह त्यागी, राजा दरवाजा, परीक्षितगढ़, मेरठ, १६ वर्ष, डाक टिकट संग्रह, पढ़ना, पत्र-मित्रता एवं लेखन कार्य।

घनश्याम, श्री आसूहानी, महात्मा गांधी स्कूल के सामने जरीपटका-४१ नागपुर, २१ वर्ष, मिनिस्टरों के भाषण सुनना।

घनश्याम कुमार व्यास, व्यास मेडिकल, सदर बाजार, रायपुर (म० प्र०), १८ वर्ष, पत्र-व्यवहार करना, मित्र बनाना;

नन्दलाल आहूजा, कोठा पारचा गली चौक, फैजाबाद, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फिल्में देखना, टिकट जमा करना।
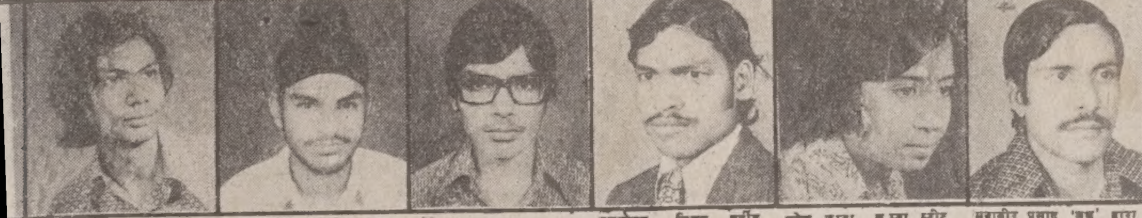
सुरेन्द्र कुमार चौरासिया, पावर हाउस, १३२ के० वी० सुल्तानपुर, १६ वर्ष, पढ़ना, दुनिया की सैर करना, मोटर चलाना।

गुरचरन सिंह कुकरेजा, २२ एम० आई० जी० फ्लैट्स राजौरी नई दिल्ली, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, लड़कों से मित्रता।

योगेश कुमार अग्रवाल, नागालैंड स्टोव इंडस्ट्री डीमापुर, नागालैंड, १८ वर्ष, मुफ्त की बदनामी मोल लेना, पढ़ना और पढ़ाना।

बृजमोहन, विजय वर्गीय मुजरों का मोहल्ला बीकानेर, २२ वर्ष, पढ़ाई करना, गरीबों की सेवा करना व मित्रता करना।

सुरेश लूम्बा, लूम्बा स्ट्रीट सिविल लाइन लुधियाना, १५ वर्ष, मित्रता करना, खेलना, गरीबों की पूरी तरह मदद करना।

महावीर प्रसाद 'मधु' द्वारा खेरायत खेमराज, काठ मन्डी हिसार, २० वर्ष, शेरो शायरी करना, पत्र-मित्रता करना, पढ़ना।
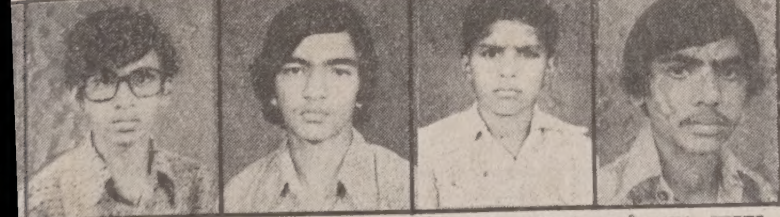
अनिल सिंह निर्वान, मानकी कोठी बर्दवान कम्पाउण्ड रांची, १४ वर्ष, पढ़ना, फील खेलना, नदी में तैरना, दौड़ लगाना।

मुकेश गुप्ता, एम० बी० एम० इंजीनियरिंग कालिज जोधपुर राज०), १७ वर्ष, मस्ती मारना, माउथ आरगन बजाना।

नरेश कुमार जायसवाल, मोहिदार थाना रायगढ़, (म० प्र०), १३ वर्ष, साईकिल चलाना, पत्र-मित्रता करना।

जयदीश कुमार, नानकराम, बुवार, (म० प्र०), १८ वर्ष, उल्लू से रिश्ता बनाना, देश-विदेश की यात्रा करना, घूमना।

...ा फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन करोंफ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

...तेज प्राइवट लिमिटड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी

सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

२१ नवम्बर से २९ नवम्बर ७८ तक

मेष : इस सप्ताह का अधिकांश समय कारोबारी कामों में ही व्यतीत होगा, लाभ की प्राप्ति होने लगेगी, व्यर्थ के कामों पर व्यय होता रहेगा, दौड़धूप अधिक, आय में वृद्धि होगी।

वृष : घरेलू समस्याओं से परेशानी बनी रहेगी, अधिकतम समय व्यर्थ की उलझनों में ही खराब होता रहेगा, आत्म-विश्वास बढ़ेगा, हालात नियन्त्रण में ही रहेंगे, व्यापार में सुधार होगा।

मिथुन : यह सप्ताह शुभफलों से युक्त होने पर भी संघर्षपूर्ण-सा महसूस होगा, नई पुरानी समस्यायें बनी रहेंगी, लाभ ठीक समय पर मिलता रहेगा, काम बन जायेंगे, कारोबार सुधरेगा।

कर्क : इस सप्ताह में शुभ अशुभ मिश्रित-फल मिलते रहेंगे, उलझनें बराबर बनी रहेंगी फिर भी हालात आपके वश में ही रहेंगे, कुछ आवश्यक कामों में सफलता मिलती रहेगी।

सिंह : संघर्षमय होते हुए भी यह सप्ताह पिछले दिनों की अपेक्षा अच्छा रहेगा, कामकाज में व्यस्तता रहेगी, लाभ भी अच्छा होने लगेगा, कुछ कामों में सुधार होगा, कोई अधूरा काम बन जायेगा।

कन्या : यह सप्ताह संघर्षमय होने पर भी शुभफलों से युक्त है, व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति परन्तु लाभ पहले समान ही होता रहेगा, नई वस्तुओं की खरीद पर व्यय होगा, शत्रु पर विजय।

तुला : व्यापारिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण से यह सप्ताह उत्तम रहेगा, कुछ संघर्ष आयेंगे और स्वयं ही समाप्त हो जायेंगे, कामकाज में रुचि बढ़ेगी और लाभ भी अच्छा होता रहेगा।

वृश्चिक : यह सप्ताह प्रायः पहले जैसा ही रहेगा, किसी प्रियजन के मिलाप से प्रसन्नता, कोई शुभ सूचना मिलेगी, कारोबार से उत्तम लाभ, यात्रा भी हो सकती है, विरोधी पक्ष से बचें।

धनु : यह सप्ताह दिलचस्प भी है और संघर्षमय भी, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, यात्रा सावधानी से करें, चोट लगने का भय है, कारोबार की दृष्टि से दिन लाभप्रद हैं, आय में वृद्धि।

मकर : संघर्षपूर्ण होते हुए भी यह सप्ताह पर्याप्त अच्छा रहेगा, सरकारी कामों में सफलता जो काफी प्रयत्नों के बाद नसीब होगी, नए कामों पर व्यय होगा, यात्रा की आशा है।

कुम्भ : यह सप्ताह कामकाज की व्यस्तता में ही निकल जावेगा, लाभ पहले से अच्छा होगा परन्तु मिलेगा कुछ देरी से, संतान पक्ष से चिन्ता या व्यय अधिक करना पड़ेगा, यात्रा की आशा है।

मीन : आर्थिक दृष्टिकोण से सप्ताह अच्छा रहेगा, कारोबार में सुधार होगा और लाभ भी बढ़ेगा, दौड़धूप काफी रहेगी, यात्रा सावधानी से करें, चोट लग सकती है, सरकारी काम कुछ देर से बनेंगे।

'एक अभिनेत्री को सब कुछ करना पड़ता है'

प्रेमा नारायण

● विजय भारद्वाज

प्रेमा नारायण का जन्म ३ जनवरी को कलकत्ता में हुआ। इनका वास्तविक नाम है रोमू। प्रेमा नारायण ने मैट्रिक तक शिक्षा पाने के बाद फिल्म लाइन पकड़ने का फैसला कियां। नवोदिता के नाते प्रेमा नारायण के सामने भी बेशुमार मुश्किलें आईं लेकिन इस साहसी सुन्दर कामिनी के सामने हर कठिनाई आसान होती चली गई। प्रेमा नारायण के अपने शब्दों में 'इन्सान को हिम्मत नहीं हारनी चाहिये और अपनी मन्जिल को नजरअन्दाज नहीं करना चाहिये। मेहनती और ईमानदार इन्सान का साथ ऊपर वाला भी देता है।'

अपनी इसी लगन और ईमानदारी के आधार पर आज प्रेमा नारायण एक चर्चित अभिनेत्री हैं। 'ग्लैमर गर्ल' के नामों की जब कभी भी गणना की जाती है प्रेमा नारायण का नाम जुबान पर आ जाता है।

इनके अभिनय में जो बांकापन है, वह बहुत कम हशीनाओं में मिलता है। इनकी प्रथम फिल्म थी 'मन्जिलें और भी हैं।' अपनी प्रथम फिल्म की दिलमोहक झलक के बाद ही यह निर्माता-निर्देशकों की नजर में चढ़ गयी और मेहनत रंग लाई। 'अमानुष', 'पोंगा पण्डित' में इन्होंने जो अभिनय किया है, वह बेमिसाल है।

प्रेमा नारायण बंगाली माता और आसामी पिता की सन्तान हैं। रंग रूप निहायत आकर्षक, सम्पूर्ण अनुपात में तथा तुला शरीर और इसके अतिरिक्त लम्बे चेहरे पर दो चंचल आंखें जो अनायास ही अपनी जुबानी सुना देती हैं। लम्बे घने काले बाल इनकी सुन्दरता बढ़ाया करते हैं।

अपने जमाने की प्रसिद्ध तारिका अनिता गुहा इनकी मौसी हैं। सन १९७१ में प्रेमा नारायण 'भारत सुन्दरी' चुनी गई जिससे इनकी सुन्दरता का सबूत पक्का हो जाता है।

एक मुलाकात में जब यह पूछा कि क्या आपको केवल ग्लैमरस और सैक्सी रोल ही पसन्द हैं? आप लीक से हट कर चरित्र के रोल क्यों नहीं साइन करतीं तो प्रेमा नारायण दूध जैसे सफेद दांतों भरी मुस्कान के साथ

बोलीं, 'कोई भी नारी यह नहीं चाहती उसके अंगों को पर्दे पर निर्वस्त्र दे[illegible] दर्शक सीटियां बजायें। लेकिन एक अभि[illegible] को यह सब कुछ करना पड़ता है। पर्दे के पीछे जब भी मिलोगे मैं पूरी मीटर की साड़ी पहने मिलूंगी। ग्लैमर सैक्सी लाईफ मेरी केवल पर्दे तक सीमित है।'

यह सुनकर हमने सचमुच महसूस [illegible] की इन्टरव्यू के लिये मैं जितनी बार भी तक प्रेमा से मिला दूं वह मुझे पूर्ण भार[illegible] नारी नजर आई हैं। सभ्य और सुशील कि पर्दे वाली अर्धनग्न युवती।

'विवाह के...सिलसिले में आपके विचार हैं? आप विवाह बन्धन को [illegible] हद तक मान्यता देती हैं।'

'मैं विवाह बन्धन को महत्वपूर्ण [illegible] मानती हूँ और बिना विवाह किये [illegible] अभिनेत्रियों की तरह मर्दों के साथ र[illegible] मुझे मन्जूर नहीं है।' प्रेमा नारायण स्पष्ट करते हुये कहा।

१३ पंचशील, वाटर फील्ड रोड,
बान्दरा, बम्बई—४०००५०